कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 27 अक्टूबर 2025 वर्ष-80 अंक - 9 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

कम सिंचाई में अधिक लाभ देने वाली दलहनी फसल मसूर

मध्य प्रदेश के 23 लाख से अधिक किसानों को 1800 करोड़ की राहत

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस साल अतिवृष्टि और बाढ़ के कारण किसानों की फसल को नुकसान हुआ। पीला मोजेक और कीट प्रकोप ने भी किसानों को परेशानी में डाला। इसी तरह बारिश के कारण जनहानि, पशुहानि और मकान क्षति से भी किसानों को पीड़ा हुई। ऐसे कठिन हालातों में सरकार ने किसानों को संबल देने में कोई कमी नहीं रखी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि अतिवृष्टि, बाढ़, कीट प्रकोप से फसल/मकान क्षति की परेशानियों से जूझ रहे प्रदेश के 23 लाख 81 हजार से अधिक प्रभावित किसानों को अब तक लगभग 1802 करोड़ रुपए की राहत राशि वितरित की जा चुकी है। मुख्यमंत्री ने बताया कि यह राशि गत वित्त वर्ष 2024-25 में बांटी गई 660.57 करोड़ रुपए राहत राशि से करीब तीन गुना अधिक है।

किसानों को राहत राशि देने में कोई कमी नहीं करेंगे।
- डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, म.प्र.

- अतिवृष्टि, बाढ़, पीला मोजेक, कीट व्याधि से फसल क्षति और प्राकृतिक आपदा प्रभावित किसानों को दी राहत राशि
- गत वर्ष की तुलना में तीन गुना राहत राशि का हुआ वितरण

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अन्नदाता किसानों के लिए सरकार के खजाने में धन की कोई कमी नहीं है। प्रदेश के हर जरूरतमंद किसान को तत्परतापूर्वक सरकार का साथ, सहयोग और संबल दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वित्त वर्ष 2021-22 में 1590.74 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2022-23 में 726.15 करोड़ रुपए और वित्त वर्ष 2023-24 में 758.62 करोड़ रुपए राहत राशि सरकार द्वारा वितरित की गई थी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि अतिवृष्टि/बाढ़ एवं पीला मोजेक/कीट व्याधि से फसल हानि के लिए 23 लाख 81 हजार 104 प्रभावित किसानों को 1623.51 करोड़ रुपए राहत राशि दी गई है। प्राकृतिक आपदा से हुई विभिन्न प्रकार की क्षतियों की पूर्ति के लिए राहत के रूप में 178.45 करोड़ रुपए वितरित किए गए हैं। इस प्रकार प्रदेश में अतिवृष्टि/बाढ़, पीला मोजेक/ कीट व्याधि से फसल हानि और विभिन्न प्राकृतिक आपदा से प्रभावित किसानों को लगभग 1802 करोड़ रुपए की राहत राशि सरकार द्वारा वितरित की जा चुकी है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषि यंत्रों पर जीएसटी दरों में सुधार से किसानों को सीधा लाभ : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के ग्राम डुमरीखुर्द में आयोजित 'ग्राम चौपाल' में ग्रामीण साथ संवाद किया। श्री चौहान ने किसानों के हित में केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त प्रयासों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि सरकार उत्पादन बढ़ाने, बेहतर बीज उपलब्ध कराने और लागत घटाने के लिए लगातार कदम उठा रही है। श्री चौहान ने बताया कि जीएसटी दरों में सुधार के बाद कृषि यंत्रों पर जीएसटी 12 प्रतिशत और 18 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी गई है, जिससे किसानों को सीधा आर्थिक लाभ मिलेगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसल के नुकसान की भरपाई का आश्वासन दिया। उन्होंने किसानों से बातचीत करते हुए प्रमुख फसलों, उत्पादन लागत और स्थानीय खाद्य की दुकानों की आवश्यकता जैसे मुद्दे की भी जानकारी ली।

श्री चौहान ने केंद्र सरकार के दलहन आत्मनिर्भरता मिशन के तहत मसूर और चना के उत्पादन बढ़ाने की पहल से अवगत कराया और किसानों के सुझाव भी मांगे। उन्होंने बताया कि इस वर्ष केंद्र सरकार ने रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की है जिससे किसानों को लाभ होगा। विशेष रूप से गेहूं, चना, मसूर और सरसों की एमएसपी में वृद्धि की जानकारी भी दी।

इस 'ग्राम चौपाल' में बड़ी संख्या में किसान, स्वयं-सहायता समूह की दीदियां और पंचायत प्रतिनिधि उपस्थित थे, जिन्होंने केंद्रीय कृषि मंत्री से अपनी समस्याएं और सुझाव साझा किए।

इफको द्वारा केंद्रीय कृषि मंत्री का स्वागत

भोपाल (कृषक जगत)। भारत सरकार के केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के भोपाल निवास पर इफको के राज्य प्रबंधक डॉ. डी. के. सोलंकी ने मुलाकात कर केन्द्रीय कृषि मंत्री का स्वागत किया। इस दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री को इफको द्वारा प्रदेश में चलाई जा रही विभिन्न कृषक हितैषी गतिविधियों एवं नैनो उर्वरकों के उपयोग में की जा रही सेवाओं पर जानकारी दी। डॉ. सोलंकी ने केंद्रीय कृषि मंत्री को बताया इफको द्वारा किसानों के लिए समय-समय पर खेती की उन्नत जानकारी के लिए किसान संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इफको संकट हरण बीमा पॉलिसी एवं नैनो उर्वरक का उपयोग बढ़ाने के लिए प्रदेश में किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। केंद्रीय कृषि मंत्री ने इफको द्वारा की जा रही गतिविधियों को किसानों के लिए हितैषी बताया एवं इफको को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर इफको के वरिष्ठ विपणन प्रबंधक डॉ. ओमशरण तिवारी भी उपस्थित थे।

गेहूं की नई उन्नत किस्म WH-1402 लॉन्च

नई दिल्ली (कृषक जगत)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (CCSHA) ने किसानों के लिए एक नई और उन्नत गेहूं की किस्म WH-1402 लॉन्च की है, जो न केवल उच्च पैदावार और गुणवत्ता के लिए जानी जाती है, बल्कि तेजी से पकने के कारण भी किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय ने श्री संत सीड्स एलएलपी, टोहाना के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि इस नई किस्म के बीज अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे।

विशेषताएं

WH-1402 किस्म की विशेषता यह है कि यह 147 दिनों में पूरी तरह पककर तैयार हो जाती है। इसमें बालियां लंबी और मजबूत होती हैं, जिससे यह तेज़ हवाओं या बारिश में भी गिरने की संभावना को कम करती है। यह किस्म 100 दिन में बालियां निकालती है, और इसके पौधों की ऊंचाई लगभग 100 सेंटीमीटर तक होती है। इसके अलावा, इसमें 11.3 प्रतिशत प्रोटीन, 77.7 किलो/हेक्टोलिटर वजन, और लौह (37.6 पीपीएम) और जिंक (37.8 पीपीएम) जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाए जाते हैं।

सिर्फ147 दिनों में होगी तैयार

बीज दर और सिंचाई

WH-1402 किस्म की बिजाई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के पहले सप्ताह के बीच की जाती है। इसकी बीज दर 100 किलो प्रति हेक्टेयर रखी गई है। यह किस्म दो बार सिंचाई की मांग करती है - पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद और दूसरी सिंचाई 80-85 दिन बाद।

किसानों को मिलेगा लाभ

WH-1402 का मुख्य उद्देश्य किसानों को उन्नत तकनीकी से अधिक पैदावार और बेहतर गुणवत्ता वाली गेहूं की फसल प्राप्त कराना है।

भारत अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन 30 अक्टूबर से नई दिल्ली में

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने घोषणा की है कि भारत अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन (बीआईआरसी) 2025, 30-31 अक्टूबर 2025 को नई दिल्ली के भारत मंडपम, प्रगति मैदान में आयोजित होगा। यह सम्मेलन वैश्विक चावल व्यापार में पारदर्शिता, दक्षता और लचीलापन बढ़ाने के लिए उत्पादकों, निर्यातकों, आयातकों, नीति निर्माताओं और कृषि विशेषज्ञों को एक मंच पर लाएगा।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल उत्पादक और निर्यातक है, जो 172 से अधिक देशों को चावल आपूर्ति करता है। बीआईआरसी 2025 के माध्यम से भारत वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में अपनी स्थिति को और मजबूत करेगा। इस सम्मेलन में फिलीपींस, घाना, नामीबिया और गांबिया जैसे देशों के विदेश मंत्री भी भाग लेंगे।

बीआईआरसी 2025 में रु. 1.80 लाख करोड़ के नए चावल बाजारों की संभावना है और रु. 25,000 करोड़ के निर्यात समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाने का अनुमान है। सम्मेलन में 3,000 किसान, 80 देशों के 1000 विदेशी खरीदार और 2500 निर्यातक भाग लेंगे। इसके साथ ही, भारत की समृद्ध चावल विरासत पर आधारित एक कॉफी टेबल बुक का अनावरण किया जाएगा।

भारत ने 2024-25 में लगभग 150 मिलियन टन चावल का उत्पादन किया, जो वैश्विक उत्पादन का 28 प्रतिशत है, और 12.95 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के 20.1 मिलियन मीट्रिक टन चावल का निर्यात किया।

कपास उत्पादन 335 लाख गांठ होने का अनुमान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कपास उत्पादन को लेकर 2025-26 के सीजन में देश में अच्छी उम्मीदें जताई जा रही हैं। कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, इस बार कपास का उत्पादन 312 से 335 लाख गांठ के बीच रहने की संभावना है। इस अनुमान के पीछे इस साल की कपास की बुआई और शुरुआती पैदावार के आंकड़े हैं, जिनमें गुजरात और पंजाब जैसे राज्यों में अच्छी उपज का रुझान देखा गया है। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में अधिक बारिश की वजह से उत्पादन प्रभावित हुआ है। इस बार कपास की खेती लगभग 111 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हुई है, जो पिछले साल के 112.97 लाख हेक्टेयर के लगभग बराबर है।

कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने यह भी बताया कि 2025-26 सीजन के लिए शुरुआती स्टॉक 60.59 लाख गांठ रहने का अनुमान है, जो पिछले साल के 39.19 लाख गांठ की तुलना में काफी ज्यादा है। इसके पीछे मुख्य वजह बेहतर उत्पादन के साथ उच्च आयात को माना जा रहा है। हालांकि, मंडियों में नई कपास की आवक शुरू हो चुकी है, लेकिन कीमतें न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे चल रही हैं, जिससे किसानों को नुकसान का खतरा बना हुआ है।

सीएआई की रिपोर्ट

कपास उत्पादन वाले राज्यों की स्थिति

महाराष्ट्र 89.09 लाख गांठ कपास उत्पादन के साथ शीर्ष स्थान पर है, जहां खेती का क्षेत्रफल 40.86 लाख हेक्टेयर है, लेकिन यहां उपज 370.66 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से कम है। दूसरी ओर, गुजरात 23.92 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास की खेती करता है और 507.02 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की उच्च उत्पादकता के कारण 71.34 लाख गांठ उत्पादन करता है। तेलंगाना भी एक उभरता हुआ बड़ा उत्पादक राज्य है, जहां 468.04 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की अच्छी उपज के साथ लगभग 49.86 लाख गांठ कपास उत्पादन की उम्मीद है। राजस्थान में 500.24 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की मजबूत उपज के साथ 18.45 लाख गांठ उत्पादन होने का अनुमान है, जबकि मध्य प्रदेश 425.98 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की उपज के साथ 15.35 लाख गांठ कपास उत्पादन करेगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित गोवर्धन पूजा के राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव। इस अवसर पर सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग, पशुपालन राज्य मंत्री श्री लखन पटेल एवं पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर उपस्थित थीं।

श्री वर्मा को संचालक कृषि का अतिरिक्त प्रभार

भोपाल (कृषक जगत)। राज्य शासन ने 2012 बैच के आईएएस अधिकारी उप सचिव कृषि श्री संतोष कुमार वर्मा को संचालक कृषि का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है।

ज्ञातव्य है कि संचालक कृषि श्री अजय गुप्ता सहित 17 आईएएस अधिकारियों को राज्य शासन ने बिहार विधान सभा चुनाव में प्रेक्षक बनाकर भेजा है। जानकारी के मुताबिक लगभग एक माह के लिए चुनाव प्रेक्षक बनाए गए इन अधिकारियों के स्थान पर अन्य आईएएस अधिकारियों को अपने वर्तमान कर्तव्यों के साथ-साथ अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

भावांतर योजना के लिए मंडी बोर्ड में कंट्रोल रूम बना

भोपाल (कृषक जगत)। राज्य शासन द्वारा प्रदेश के सोयाबीन उत्पादक कृषकों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए सोयाबीन भावांतर योजना 2025 के तहत मंडी बोर्ड मुख्यालय भोपाल में कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है जो प्रात: 8 से शाम 8 बजे तक निरंतर कार्य करेगा। कंट्रोल रूम का दूरभाष नंबर 0755-2556207 है। सोयाबीन की खरीदी 24 अक्टूबर 2025 से प्रारंभ हो गई है।

कोई भी कृषक/व्यापारी योजना से सम्बंधित किसी भी सूचना के सम्बंध में कंट्रोल रूम से संपर्क कर सकता है। कंट्रोल रूम प्रभारी संयुक्त संचालक सुश्री संगीता ढ़ोके को नियुक्त किया गया है।

इस वर्ष गेहूं बीज 4600 रुपए क्विंटल मिलेगा

रबी फसलों की बीज दरें तय, अनुदान अलग से देय होगा

(अतुल सक्सेना)

भोपाल (कृषक जगत)। म.प्र. शासन ने रबी 2025-26 के लिए प्रमाणित बीजों एवं जैविक बीजों की उपार्जन, विक्रय एवं अनुदान दरें निर्धारित कर दी हैं। इसके साथ ही गेहूं की ऊंची एवं बौनी जाति की बायोफोर्टिफाइड्स किस्मों की 3 वर्ष से कम अवधि की बीज दर भी तय की गई है। वहीं इस वर्ष चना काबुली एवं मटर अर्किल की दरें भी निर्धारित की गई हैं। इस वर्ष कृषकों को गेहूं बीज 4600 रुपए प्रति क्विंटल मिलेगा। बीज दरों का निर्धारण कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में बीज निगम के प्रस्ताव पर हुई बैठक में लिया गया। निर्णय के मुताबिक इस वर्ष गेहूं, मोटा अनाज (जौ) एवं दलहनी फसलों के प्रमाणित बीज 10 वर्ष तक अवधि की समस्त किस्मों पर तथा 10 वर्ष से अधिक अवधि की किस्मों पर अलग-अलग अनुदान दिया जाएगा।

बीज दर : जानकारी के मुताबिक रबी 2025-26 में किसान को फोर्टिफाइड्स किस्म का ऊंची एवं बौनी जाति का गेहूं बीज 4860 रु. एवं 4670 रु. प्रति क्विंटल मिलेगा। वहीं गेहूं की ऊँची जाति एवं बौनी जाति 10 वर्ष तक एवं अवधि का गेहूं बीज 4600 रु. प्रति क्विं. किसानों को उपलब्ध होगा तथा अनुदान एनएफएसएम (गेहूं) योजना के तहत दिया जायेगा। गेहूं बीज की ऊंची जाति की उपार्जन दर 2800 रु. प्रति क्विंटल तथा बौनी जाति की उपार्जन दर 2700 रु. प्रति क्विंटल तय की गई है। प्रदेश में चने का बीज 8720 रु. क्विंटल मिलेगा। मटर बीज 6760 रु. क्विंटल मिलेगा। कृषकों को जौ का बीज 10 वर्ष तक की अवधि का 4010 रु. क्विं. मिलेगा।

अनुदान : इस वर्ष 2025-26 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन से अनुदान मिलेगा। जो अलग-अलग फसल किस्मों पर अलग-अलग होगा। वहीं सरसों एवं अलसी पर राष्ट्रीय मिशन ऑन इडिबल ऑयल (तिलहन) के तहत योजना के मुताबिक अनुदान दिया जायेगा। किसानों को निगम एवं संस्थाओं द्वारा वितरण किए जाने वाले बीज पर अनुदान का भुगतान उपसंचालक कृषि द्वारा सीधे खाते में किया जाएगा।

जानकारी के मुताबिक गेहूं की 10 वर्ष तक की किस्म पर 1000 रु. तथा 10 वर्ष से अधिक अवधि पर 800 रु. प्रति क्विंटल अनुदान दिया जाएगा। इसी चने की 10 वर्ष की अवधि वाली किस्म पर 3300 एवं 10 वर्ष से अधिक अवधि पर 2500 रु., मसूर की 10 वर्ष तक अवधि वाली किस्म पर 3850 रु. एवं 10 वर्ष से अधिक अवधि पर 2500 रु. तथा जौ की 10 वर्ष तक की अवधि वाली किस्म पर 1750 रु. एवं 10 वर्ष से अधिक पर 1500 रु. प्रति क्विंटल अनुदान दिया जाएगा।

रबी बीजों की उपार्जन एवं विक्रय दर (इकाई- रुपए प्रति क्विं.)

फसल	कृषकों के लिए उपार्जन दरें (बोनस सहित)	संस्था की सकल विक्रय दर (बीज वितरण अनुदान अलग से देय होगा)
गेहूं ऊंची जाति (3 वर्ष से कम अवधि) (बायोफोर्टिफाइड किस्में)	3050	4860
गेहूं ऊंची जाति (3 से 10 वर्ष तक की अवधि)	2800	4600
गेहूं ऊंची जाति (10 वर्ष और उससे अधिक)	2800	4600
गेहूं बौनी जाति (3 वर्ष से कम अवधि) (बायोफोर्टिफाइड किस्में)	3000	4670
गेहूं बौनी जाति (3 से 10 वर्ष तक की अवधि)	2700	4350
गेहूं बौनी जाति (10 वर्ष और उससे अधिक)	2700	4350
चना (10 वर्ष और उससे अधिक)	6000	8720
चना काबुली (10 वर्ष और उससे अधिक)	8200	11030
मटर (10 वर्ष और उससे अधिक)	4800	6760
मटर अर्किल (10 वर्ष और उससे अधिक)	5100	7080
मसूर (10 वर्ष और उससे अधिक)	6800	9070
सरसों (15 वर्ष और उससे अधिक)	6250	9500
अलसी (15 वर्ष और उससे अधिक)	5900	8130
जौ (10 वर्ष और उससे अधिक)	2200	4010
मूंग ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष और उससे अधिक)	9000	11380
उड़द ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष और उससे अधिक	8200	10540
जैविक बीज की दरें		
गेहूं (10 वर्ष और उससे अधिक)	2900	4610
अलसी (15 वर्ष और उससे अधिक)	6000	9240

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

उत्साही मनुष्य कठिन से कठिन काम आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते। - *वाल्मिकी*

करोड़ों किसानों का साथी... एआई से मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम

देश के करोड़ों किसानों की आय और आजीविका का मुख्य स्रोत खरीफ की खेती होती है लेकिन इसके लिए किसान वर्षा पर निर्भर रहते हैं। यदि मानसून के बारे में किसानों को पहले से ही मौसम संबंधी पूर्व जानकारी मिल जाए तो उन्हें यह निर्णय लेने में काफी मदद मिल सकती है कि कौन सी फसल, कितनी मात्रा में और कब बोवनी करनी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस - एआई) द्वारा संचालित मौसम पूर्वानुमान में क्रांति के कारण अब यह संभव हो सका है। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा किसानों के लिए एआई की शक्ति का उपयोग किया जा रहा है। एक अनूठी सार्वजनिक पहल के तहत कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस वर्ष 13 राज्यों के लगभग 3 करोड़ 80 लाख किसानों को एसएमएस के माध्यम से एआई-आधारित मानसून पूर्वानुमान भेजे थे। एआई-आधारित मॉडलों ने किसानों की ज़रूरतों के अनुसार विशेष रूप से पूर्वानुमान तैयार करना संभव बना दिया है, जिससे किसानों को खरीफ फसल संबंधी निर्णय लेने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण मिल गया है। यह अब तक एआई मौसम पूर्वानुमानों का यह अपनी तरह का पहला सफल प्रयोग है जिससे किसानों को सीधे लाभ पहुंचाने के लिए एआई मौसम पूर्वानुमान लागू करने में विश्व-अग्रणी के रूप में स्थापित करना सम्भव हो सका है। इस वर्ष, मानसून समय से पहले आ गया था, लेकिन उत्तर की ओर बढ़ने में रुकावट आने से 20 दिनों तक बारिश रुकी रही। मंत्रालय ने एआई आधारित पूर्वानुमानों से मानसून की इस रुकावट की सटीक पहचान की। सरकार ने किसानों को हर हफ्ते अद्यतन जानकारी भेजी

एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम निरंतर वर्षा की भविष्यवाणी करने से किसानों को अधिक आत्मविश्वास के साथ कृषि गतिविधियों की योजना बनाने और जोखिमों का प्रबंधन करने में मदद मिलती है। साथ ही 'जलवायु परिवर्तन' के कारण मौसम में परिवर्तनशीलता बढ़ रही है, इसलिए पूर्वानुमान किसानों को समय के साथ तारतम्य स्थापित करने में मदद करने का एक उपयोगी साधन सिद्ध हो रहा है। भारत में वर्ष 2022 से कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रेरित एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम ने मौसम पूर्वानुमान के विज्ञान को पूरी तरह बदल दिया है और कई स्थितियों में अधिक सटीक पूर्वानुमान जारी किए हैं। इस कार्यक्रम से भारतीय मानसून जैसी जटिल घटनाओं का हफ्तों पहले पूर्वानुमान लगाने की क्षमता को और बढ़ा दिया है। मंत्रालय ने करोड़ों किसानों के हित के लिए इस क्रांति को लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। एआई-आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम के तहत डेवलपमेंट इनोवेशन लैब - इंडिया और प्रिसिजन डेवलपमेंट की टीमों के साथ काम करते हुए मंत्रालय ने किसानों के साथ प्रत्यक्ष रूप से संवाद स्थापित किया। इस पहल से यह सुनिश्चित करने में सहायता मिली कि प्रेषित किए जाने वाले संदेश किसानों को आसानी से समझ में आ जाएं ताकि वे संदेश के अनुसार अपना कार्य आसानी से कर सकें। भारत जैसे विविध जलवायु वाले देश में एआई आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। कृषि और ग्रामीण विकास के साथ पर्यटन और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका हो सकती है। वर्तमान में भारतीय मौसम विभाग द्वारा मौसम की सटीक जानकारी दी जा रही है और इसका लाभ कृषि में भी हो रहा है। चूंकि किसान ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं और दूर-दराज के क्षेत्रों में नेटवर्क की काफी समस्या भी रहती है। इसलिए नेटवर्क की सुचारू रूप से उपलब्धता होने से आपदा के समय भी यह सेवा काफी मददगार हो सकती है। एआई आधारित मौसम पूर्वानुमान कार्यक्रम के बारे में भौगोलिक और भाषाई विविधता के आधार पर सभी किसानों को सूचनाएं/जानकारी देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

विकसित राष्ट्र - भारत ?

• राकेश दुबे , मो. : 9425022703

फसलों की वांछित कीमत तो मिले

यूँ तो जीएसटी सुधार एक अच्छा फैसला है, लेकिन ऐसी रियायतों के जरिए ही भारत 2047 में 'विकसित राष्ट्र' नहीं बन सकता। उसके लिए आर्थिक विकास दर कमोबेश 8-10 फीसदी होना अनिवार्य है। फिलहाल तो अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां 6.5 से 6.9 फीसदी के आकलन कर रही हैं। हम अभी बहुत दूर हैं। जीएसटी के अलावा, कानून, श्रम, भूमि, न्याय आदि कई क्षेत्रों में सुधार अनिवार्य और अपेक्षित हैं। भूमि की उपलब्धता और समानता का सुधार भी बेहद जरूरी है। किसान को सिर्फ ट्रैक्टर, थ्रेशर, सिंचाई मशीन ही नहीं चाहिए, बल्कि आर्थिक तौर पर समानता भी चाहिए। कमोबेश उसे फसलों की वांछित कीमत तो मिले। वह कर्ज के काले यथार्थ से बाहर निकल सके। 'किसान सम्मान राशि' तो 'ऊंट के मुंह में जीरा' है। यह सम्मान नहीं, खैरात है। किसान की फसलें बेहतर दाम पर बिक सकें, सरकार को यह बंदोबस्त करना ही होगा। अलबत्ता 'विकसित भारत' एक नारा, एक सपना बनकर रह जाएगा। आम आदमी इस दृष्टि से भी अपनी स्थितियों के आकलन करे। यह भी घोर, कटु सच्चाई है कि आज भी 81 करोड़ से अधिक भारतीय मुफ्त के अनाज के भरोसे हैं। आज भी सरकारी आंकड़ा मानें, तो 15-20 करोड़ भारतीय 'गरीबी रेखा' के तले जीने को अभिशप्त हैं। आज भी करीब 85 फीसदी किसान औसत स्तर पर हैं। उनके पास या तो 2-4 हेक्टेयर भूमि है अथवा वे दूसरे की जमीन पर खेती करने को विवश हैं।

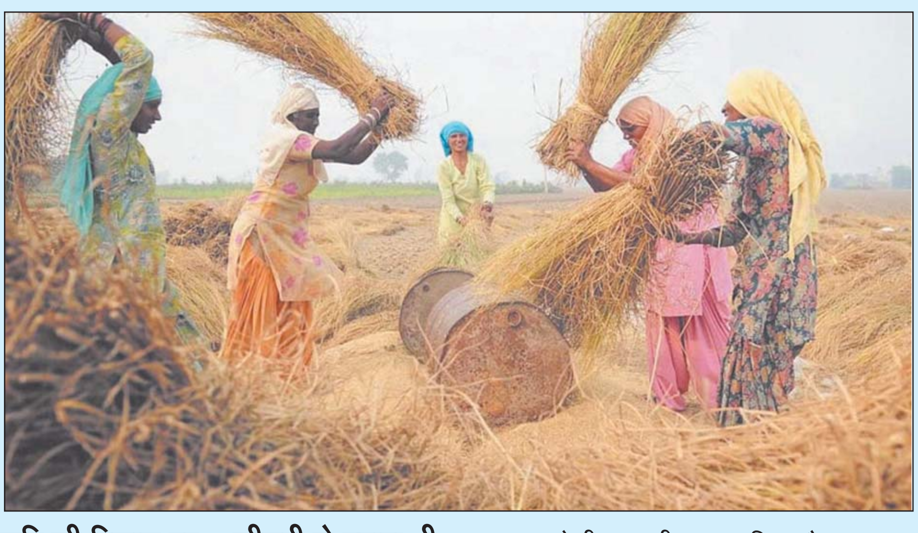

कृषि की विकास दर 3 फीसदी से ज्यादा थी

देश के जीडीपी में कृषि का योगदान बढ़ना चाहिए। याद रहे कि कोरोना महामारी के दौरान भी कृषि की विकास दर 3 फीसदी से ज्यादा थी। देश ऐसे आत्मनिर्भर नहीं बन सकता कि वस्तुएं 2, 4, 10 रुपए सस्ती कर दी जाएं। देश का नागरिक कार, घर तभी खरीदने की सोच सकता है, जब उसके पास अतिरिक्त संसाधन होंगे। अभी तो आम आदमी रोजी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहा है। देश के मात्र 4 फीसदी लोगों की औसत आय 50,000 रुपए माहवार है। हम देश के 1 फीसदी धन्नासेठों की न तो बात कर रहे हैं और न ही हमारे विषय के पात्र मान रहे हैं। बहरहाल जीएसटी सुधार आम आदमी के लिए बड़ी राहत हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था में विस्तार हुआ

प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भरता के साथ-साथ 'स्वदेशी' का भी आह्वान किया है। 'स्वदेशी' आरएसएस का सैद्धांतिक मुद्दा रहा है। 'स्वदेशी जागरण मंच' उसका सहयोगी संगठन है। केंद्र में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के दौरान भी 'स्वदेशी' के नारे खूब गूंजते थे, लेकिन तब भी उन आर्थिक सुधारों को स्वीकार कर उनकी निरंतरता बरकरार रखनी पड़ी, जिनका सूत्रपात पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और उनके वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने किया था। भारत ने भूमंडलीकरण और उदारीकरण को स्वीकार करते हुए शेष विश्व के लिए दरवाजे खोले थे, नतीजतन बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में प्रवेश बढ़ाना शुरू किया था। उस दौर के बाद ही भारत की अर्थव्यवस्था में विस्तार हुआ और आज हम चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। सिर्फ 'स्वदेशी' के जरिए ही 146 करोड़ से अधिक की आबादी की जरूरतों को पूरा नहीं किया जा सकता।

कच्चे माल पर 18 फीसदी जीएसटी

भारत मैन्यूफैक्चरिंग और आपूर्ति का गढ़ नहीं है। भारत में 'एप्पल' और 'सैमसंग' सरीखे विदेशी मोबाइल फोन की हम 'एसेंबलिंग' करते हैं, लेकिन दावा करते रहे हैं कि हम विश्व में दूसरे सबसे बड़े निर्माता और उत्पादक हैं। विश्व-बाजार में भारतीय ब्रॉन्ड का कौनसा मोबाइल फोन धड़ाधड़ बिक रहा है, जरा प्रधानमंत्री हमें भी बता दें। हकीकत यह है कि हमारे देश में कच्चे माल पर 18 फीसदी जीएसटी है और बने हुए सामान पर अब 5 फीसदी जीएसटी का भुगतान करना पड़ेगा। क्या गजब का विरोधाभास है?

भारत में 'चिप्स' और एक अच्छी कमीज से लेकर कच्चा माल, कारें और विमान तक 'विदेशी' हैं। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के विमान तक 'विदेशी' हैं। क्या फ्रांस के 'राफेल' और एलन मस्क की 'टेस्ला' को स्वदेशी करार दिया जा सकता है? भारत में स्वदेशी का सपना साकार करने के लिए हमारी शीर्ष कंपनियों और लघु, सूक्ष्म, कुटीर उद्योग को 'अनुसंधान और विकास' पर बजट लगाना होगा।

• डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी
वैज्ञानिक- पादप रोग विज्ञान
कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर- ।, देवरी

कम सिंचाई में अधिक लाभ देने वाली दलहनी फसल मसूर

मसूर का दलहनी फसलों में विशेष स्थान है। वारानी क्षेत्रों में अधिकतर दलहनी फसलों के रूप में मसूर की खेती की जाती है। मसूर में 24.2 प्रतिशत प्रोटीन व कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है। मसूर का भूसा अत्यन्त पौष्टिक होता है व जानवर इसे चाव से खाते हैं इससे दूध की मात्रा बढ़ती है। देश में प्रमुख मसूर उत्पादक राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, बिहार, राजस्थान व पश्चिम बंगाल है। कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में सूखा व उकठा रोग प्रतिरोधी किस्मों का कम प्रचलन, अधिक उत्पादन व बोल्ड दाना वाली किस्मों का अभाव, कम उपजाऊ भूमि में मसूर की खेती आदि है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपयुक्त भूमि

मसूर की फसल सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है किन्तु मध्यम से मटियार दोमट मिट्टी इसके लिये उपयुक्त है। बुवाई के समय, हल्की जुताई कर खेत को समतल कर बीज की बुवाई कर खेत में पाटा लगाया जाता है ताकि नमी लम्बे समय तक खेत में बनी रहे।

बोवाई का समय व बीज की मात्रा

बारानी क्षेत्रों में अर्थात् असिंचित क्षेत्रों में बुवाई 25 सितम्बर से 15 अक्टूबर के बीच तथा सिंचाई सुविधा होने पर 15 अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। समय से बोनी करने पर 40 कि.ग्रा. बीज व देर से बुवाई करने पर 50 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर उपयोग करें। कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 2-3 से.मी. रखें। बोने से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन+थायरम की 2 ग्राम मात्रा या ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति कि. ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। उपचारित बीज को राइजोबियम व पी. एस. बी. कल्चर से निवेशित (उपचारित) करें। इस हेतु कल्चर की 8-10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज के मान से उपयोग करें।

उन्नत प्रजातियाँ

अच्छे उत्पादन के लिये आवश्यक है कि बीज शुद्ध हो और उसका अंकुरण प्रतिशत मानक स्तर से कम न हो। स्वस्थ, सुडौल व प्रमाणित बीज जिसका अंकुरण 70 प्रतिशत हो बोने हेतु उपयोग करें। मसूर की उन्नत प्रजातियाँ जे.एल.3, एल. 4717, एल. 4727, एल. 4729, आई.पी.एल. 316, आई.पी.एल. 81, आई.पी.एल. 547, आर.व्ही.एल. 11-6, आर. व्ही. एल. 31, कोटा मसूर -3, कोटा मसूर -4, के. 75 (मलिका) आदि का उपयोग करें।

पोषक तत्व प्रबंधन

दलहनी फसल होने के कारण मसूर की पोषक तत्व मांग कम रहती है। मसूर की फसल हेतु 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर देना आवश्यक है। बारानी क्षेत्रों में जहाँ वर्षा ऋतु की नमी में मसूर की बुवाई की जाती है वहाँ 10-15 कि.ग्रा. नत्रजन, 20-25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। जिन क्षेत्रों में पलेवा लगाकर बुवाई की जाती हैं वहाँ 15:30:10 के अनुपात में नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश दें एवं जहाँ पर सिंचाई की सुविधा हो वहां उर्वरकों की पूरी मात्रा उपयोग करें। उर्वरकों के उपयोग के साथ-साथ जैव उर्वरकों (राइजोवियम व पी.एस.बी.) का उपयोग भी आवश्यक है ताकि राइजोबियम द्वारा जड़ों में ग्रंथीकरण ठीक से हो सके व पी.एस.बी. द्वारा भूमि की अनुपलब्ध फास्फोरस पौधों को उपलब्ध करायी जा सके।

मसूर के साथ अंतरवर्तीय खेती

शरद ऋतु में बोये जाने वाले गन्ने के साथ 2:2 अनुपात में मसूर की फसल लेकर करीब 6-8 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है इससे गन्ने की फसल पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। मसूर-सरसों (8:2) अंतरवर्तीय फसल पद्धति अपनाने से मसूर में लगने वाले माहू कीट का प्रकोप कम होता है।

खरपतवार व सिंचाई प्रबंधन

मसूर की फसल हेतु अधिक मात्रा में नमी की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु फली अवस्था पर सिंचाई करने से उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मसूर की फसल व खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा अवधि 40-45 दिन है अतः बोवाई से 40-50 दिनों तक खरपतवार नियंत्रण हेतु निदाई करें।

कटाई एवं मड़ाई

जब मसूर के पौधों की पत्तियाँ की पीली पड़कर गिरने लगें तब कटाई करें। सूखी फसल की मड़ाई कर दानों को सुखाकर 10-12 प्रतिशत नमी पर भण्डारित करें।

उपज

किस्म के अनुसार बारानी क्षेत्रों में 10-12 क्विंटल व सिंचाई करने पर 18-20 क्विंटल मसूर की उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। मसूर की फसल की बारानी क्षेत्रों लागत लगभग 15000 रू. प्रति हे. व लाभ 35,000 रू. तथा सिंचाई वाले क्षेत्रों में लागत 20000 रू. व लाभ 65,000 रू. प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।

पौध संरक्षण

मसूर की फसल की कम उत्पादकता का एक प्रमुख कारण इसमें लगने वाला उकठा रोग व माहू कीट का प्रकोप है अतः समय पर इनका नियंत्रण कर उत्पादन में 30-40 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी की जा सकती है।

उकठा, फफूंदजनित रोग है व इससे मसूर की उपज में 30 प्रतिशत तक की कमी देखी गयी है। रोग प्रकोप से पूरा पौधा, फूल अवस्था के बाद सूख जाता है। रोग से बचाव हेतु उपयुक्त फसल चक्र अपनायें, उकठा अवरोधी जातियों की बुवाई करें व बुवाई पूर्व बीज कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन+थायरम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. के मान से उपचारित कर बोयें। ट्राईकोडर्मा अथवा माईकोराइजा की 1 से 2 किलोग्राम मात्रा को 1 क्विंटल नमी वाली गोबर की खाद में मिलाकर, छायावाली जगह में 10 से 15 दिन तक पॉलीथिन शीट से ढंककर रख दें। हर तीसरे दिन इस मिश्रण को पलटते रहें ताकि ट्राईकोडर्मा अथवा माईकोराइजा सुचारू रूप से पनप सके इस तरह यह मिश्रण (एक क्विंटल) एक एकड़ भूमि में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें।

मसूर की फसल में मुख्यतः माहू कीट का प्रकोप होता है जो फसल की 45-50 दिन की अवस्था से रस चूसता है जिससे पौधे कमजोर व काले पड़कर सूख जाते हैं तथा उत्पादन में कभी कभी शत प्रतिशत तक कमी आती है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड अथवा एसिटामिप्रिड अथवा पूर्व मिश्रित कीटनाशी एसिटामिप्रिड+वाईफेनथ्रिन की 100 ग्राम मात्रा को 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

चिया की उन्नत उत्पादन तकनीक

● अनिल कुमार सिंह ● ऋचा सिंह
● अक्षता तोमर ● दिनेश कुमार सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
aksjnkvv01@gmail.com

उपयुक्त जलवायु

चिया को उष्णकटिबंधीय तटीय रेगिस्तान से लेकर उष्णकटिबंधीय वर्षा वाले क्षेत्रों तक विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों में 800-2,200 मीटर की ऊँचाई तक उगाया जा सकता है। चिया सर्दियों में फूलने - फलने वाला (शॉर्ट-डे फ्लावरिंग प्लांट) पौधा है जो ठंड के प्रति संवेदनशील है। इसलिये दिसंबर और जनवरी के दौरान ज्यादा ठंड का असर इस पर होता है, क्योंकि यह समय चिया में फूल आने और बालियों में दाना भरने का समय होता है। चिया के बीज का सबसे अच्छा अंकुरण 25 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीज के तापमान में होता है। चिया पादप की जीवन चक्र अवधि 120-150 दिनों के बीच होती है।

भूमि

चिया की खेती के लिए हल्की से मध्यम या रेतीली मिट्टी जो उचित प्रकार से सूखी, मध्यम उपजाऊ हो इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है, साथ ही यह पौधे अम्लीय मिट्टी और मध्यम सूखे को सहन करने में सक्षम होते हैं। बीज बोने के बाद अंकुरण के लिए नमी की आवश्यकता होती है, परंतु परिपक्वता के दौरान गीली मिट्टी चिया के लिए उपयुक्त नहीं है।

भूमि की तैयारी

मध्यम हल्की से मध्यम भारी मिट्टी जो खरपतवार मुक्त हो, चिया की उच्च पैदावार के लिए उपयुक्त होती है। कॉम्पैक्ट मिट्टी और प्रारंभिक खरपतवार फसल वृद्धि को रोकती है। मिट्टी को पूरी तरह से तैयार करने के लिए उसकी अच्छी तरह से जुताई करें। देशी खाद (एफवाईएम) 20 टन प्रति हेक्टेयर बीज बोने या प्रत्यारोपण से कुछ दिन पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिलाया जाये।

बीज दर और समय

अच्छी गुणवत्ता वाला पुर्णरूपेण परिपक्व चिया का बीज चमकदार आवरण (कोट) वाला होता है, जो क्रीम से चारकोल भूरे गहरे अनियमित चिह्नों या धब्बों के साथ काले या सफेद रंग में होता है। भूरा फीका सफेद रंग, अपरिपक्व चिया बीज की निशानी है। पूर्ण परिपक्व बीज चमकदार गहरे रंग का होता है। इस फसल पर हुये अनुसंधान कार्यों से साबित हुआ है कि चिया की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय 5 से 15 अक्टूबर के मध्य का है।

चिया फसल में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी प्रर्याप्त है। बीज 2-3 सेमी से गहरा नहीं बोयें। आमतौर पर एक हेक्टेयर क्षेत्र में चिया की बुवाई के लिए 3 से 6 किलोग्राम बीज का उपयोग किया जाता है, जिसमें पौध उद्भव (ईमर्जेन्स) के बाद पौधों में काफी विरलीकरण (थिनिंग) करने की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई के दो सप्ताह बाद विरलीकरण करके पौधे से पौधे के बीच की दूरी 10 सेमी कर दी जाती है।

बुवाई की विधि

चिया (साल्विया हिस्पेनिका), लैमिएसी कुल का एक पौधा है, जिसे मुख्य रूप से इसके बीज के लिए उगाया जाता है। मानव आहार के लिए इसके बीज का उपयोग महत्वपूर्ण माना गया है। चिया के बीज में 25 से 60 प्रतिशत तेल होता है, जिसमें 60 प्रतिशत ओमेगा 3 अल्फा-लिनोलेनिक एसिड और 20 प्रतिशत ओमेगा 6 लिनोलिक एसिड होता है। मानव शरीर द्वारा अच्छे स्वास्थ्य के लिए दोनों फैटी एसिड आवश्यक हैं और उन्हें कृत्रिम रूप से संश्लेषित नहीं किया जा सकता है। चिया के बीजों के अनेकों लाभ हैं, चिया के बीज स्वस्थ्य त्वचा के लिए, बढ़ती उम्र के प्रभाव को कम करना, हृदय और पाचन तंत्र को बेहतर करना, मजबूत हड्डियों और मांसपेशियों का निर्माण करने में सहायक होते हैं। यह मधुमेह को कम करने के लिए भी सहायक माने जाते हैं। चिया की खेती ऑस्ट्रेलिया, बोलीविया, कोलंबिया, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, पेरू और अर्जेंटीना में की जाती है। भारत में चिया की खेती मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में की जाती है।

चिया एक मौसमी फसल है तथा बीज द्वारा लगाई जाती है। सीधे बीज बोने, नर्सरी द्वारा और मुख्य क्षेत्र में प्रत्यारोपण द्वारा फसल लगाई जाती है। प्रति हेक्टेयर के लिए 3 से 6 किलोग्राम की सामान्य बुवाई दर और 30 सेंटीमीटर की पंक्ति से पंक्ति एवं 10 सेंटीमीटर की दूरी पौधे से पौधे के बीच उपयुक्त होती है।

यदि कृषक बंधु नर्सरी द्वारा खेती करना चाहते हैं, तो अच्छी प्रकार से तैयार खेत में वांछित आकार की उठी हुई क्यारी बना लें। चिया के बीज आकार में छोटे होते हैं इसलिए क्यारी की मिट्टी भुरभरी और समतल कर लें। चिया के 100 ग्राम बीज को 1 किलो सूखी मिट्टी के साथ मिलाकर तैयार क्यारी में एकसार बोने के उपरांत बारीक वर्मी कम्पोस्ट या मिट्टी से ढंक कर हल्की सिंचाई करें। क्यारी में नियमित रूप से झारे की मदद से हल्की सिंचाई करते रहें जिससे क्यारी की मिट्टी नम बनी रहे। पौध रोपण हेतु खेत की भली-भांति साफ-सफाई करने के पश्चात जुताई कर भुरभुरा और समतल कर लें। अब खेत में 30 सेमी की दूरी पर कतारें बनाकर पौध से पौध 10 सेमी का फांसला रखते हुए पौधे रोपें। शीत ऋतु में कतार से कतार 30 सेमी और पौधे से पौधे के मध्य 10 से 20 सेमी की दूरी रखना उचित पाया गया है, क्योंकि ठंड के मौसम में पौध बढ़वार कम होती है।

चिया पौध रोपण के तुरंत बाद खेत में हल्की सिंचाई करना अनिवार्य होती है ताकि पौधे सुगमता से स्थापित हो सकें। भूमि में नमी के स्तर और मौसम के अनुसार 8-10 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करते रहें।

खाद और उर्वरक

भारत में एक नई फसल होने के कारण, चिया की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को अभी मानकीकरण हेतु परीक्षित किया जा रहा है, अच्छे पौष्टिक उत्पादन के लिए चिया की जैविक खेती करना बेहतर रहता है। इसमें पोषण की आवश्यकता को पूरा करने लिए अच्छी तरह से सड़ी हुई 15-20 टन गोबर की खाद को खेत की तैयारी से पूर्व देना लाभदायक रहता है।

हल्की मृदा में पौधों की आवश्यक वृद्धि के लिये 30 किलोग्राम नत्रजन, 23 किलोग्राम फास्फोरस और 15 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय देना लाभदायक रहता है। आवश्यकता होने पर बुवाई के 30-45 दिनों के भीतर 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की मात्रा टॉप ड्रेसिंग के रूप में दी जा सकती है।

सिंचाई प्रबंधन

चिया बीज के अंकुर की स्थापना के लिए बुवाई के समय मृदा नमी की पर्याप्त मात्रा आवश्यक है। चिया में सिंचाईयों की संख्या मृदा के प्रकार और तापमान पर निर्भर करती है, हालाँकि, आमतौर पर रेतीली या रेतीली दोमट मिट्टी में बुवाई के बाद 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। बुवाई के तुरन्त बाद सिंचाई कर दें ताकि बीजों का अंकुरण शुरू हो जाय अन्यथा बीजों को चीटियां ले जा सकती हैं। बुवाई के 7-8 दिन बाद एक हल्की सिंचाई दें ताकि बीजाकुंरण संपूर्ण हो जाये। तत्पश्चात 12-15 दिनों के अंतराल से 4 सिंचाईयां दें। यह फसल परिपक्वता अवस्था के दौरान अत्यधिक नमी के प्रति अतिसंवेदनशील होती है, अतः फसल परिपक्वता के समय सूखा वातावरण लाभदायक रहता है।

खरपतवार नियंत्रण

चिया एक बहुशाखाओं वाली फसल है, इसलिए खरपतवारों से यह बहुत अधिक प्रभावित नहीं होती है, लेकिन इसके प्रारंभिक विकास अवस्था के दौरान खरपतवार प्रबंधन करना अति आवश्यक होता है, इसके लिये बुवाई के 25-30 दिनों बाद हाथ से खरपतवार नियंत्रण करना कारगर रहता है।

चिया की फसल में पादप संरक्षण

चिया एक ऐसा पौधा है, जिसे न तो कीटों से और न ही बीमारियों से कोई समस्या उत्पन्न होती है। हालांकि,परिपक्वता अवस्था के दौरान इसकी बालियों पर चींटियों का प्रकोप देखा गया है, जिसके नियंत्रण के लिये खेत के चारों तरफ किसी कीटनाशी पाउडर की रेखा बनाकर प्रयोग किया जा सकता है। चिया की फसल पर पाले का प्रभाव भी देखा गया है, जिससे कोमल पत्तियां व उभरती हुई बालियां काली पड़ जाती हैं। पाले से प्रभावित फसल में बीज पूरी तरह से भराव नहीं कर पाते है, जिससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। दिसंबर और जनवरी के महीनों में यह फसल ठंड के प्रति संवेदनशील होती है। अतः इस दौरान पाला पड़ने की संभावना से पूर्व हल्की सतही सिंचाई करके मिट्टी के तापमान को बनाये रखा जा सकता है, तथा फसल को ठंड के कारण होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

कटाई, थ्रेसिंग और भंडारण

चिया की फसल 120-130 दिनों में परिपक्व हो जाती है। परिपक्व अवस्था में इसकी सारी पत्तियां झड़ जाती है तथा तने पर सिर्फ बालियां रह जाती हैं। चिया की फसल को दरांती से काटा जा सकता है और थ्रेसिंग के लिए बालियों को लकड़ी की डंडियों से दबाकर या कूटकर बीजों को अलग कर दिया जाता है तथा साजड़े (घरेलू उपकरण) से उफान कर बीजों को बिल्कुल साफकर लिया जाता है। इस प्रकार साफ और शुष्क (8 प्रतिशत तक नमीयुक्त) बीजों को 3-4 महीने तक सामान्य तौर पर संग्रहीत किया जा सकता है। आजकल छोटे स्कीन का उपयोग करके मानक थ्रेसर में थोड़ा संयोजन करके चिया फसल की थ्रेसिंग की जा सकती है।

उपज

रबी मौसम में चिया की 6-9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज की उपज प्राप्त की जा सकती है।

औषधीय गुण

- चिया के बीज में प्रोटीन, वसा, खनिज लवण और विटामिंस प्रचुर मात्रा में विद्यमान होते हैं जिसके कारण इसके सेवन से मांसपेशियां, मस्तिष्क कोशिकाएं और तंत्रिका तंत्र मजबूत होता है।
- चिया के बीजों में एंटी ऑक्सिडेंट्स पर्याप्त मात्रा में होते हैं, जो शरीर से फ्री रैडिकल्स को बाहर निकलने में मदद करता है, जिससे हृदय रोग और कैंसर रोग से बचा जा सकता है।
- चिया के बीजों में ओमेगा- 3 और ओमेगा- 6 फैटी एसिड पाया जाता है, जो हृदय रोग और कोलेस्ट्रॉल की समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित होता है।
- चिया के बीजों के नियमित सेवन करने से शरीर में सूजन की समस्या से निजात मिलती है।
- चिया के बीज भूख शांत करने और वजन घटाने में कारगर साबित हो रहे हैं।
- चिया के बीज का सेवन करने से शरीर में 18 प्रतिशत कैल्शियम की कमी पूरी होती है, जोकि दांत और हड्डियों को मजबूती प्रदान करने में मददगार होती है।
- शरीर की त्वचा को कांतिमय बनाने के लिए इसका नियमित सेवन अत्यंत लाभकारी बताया जा रहा है।
- पाचन तंत्र को सुधारने और मधुमेह रोगियों के लिए भी उपयोगी खाद्य है।

नेवला : खेतों का साहसी मित्र

• डॉ. दीपक हरि रानडे • डॉ. मनोज कुमार कुरील
• डॉ. स्मिता अग्रवाल, कृषि महाविद्यालय, खंडवा

नेवला, जिसे कुछ जगहों पर मुर्गल या नखला भी कहते हैं, भारत के कई हिस्सों में पाया जाता है। यह छोटा, मगर निडर जीव अपने खेतों और आसपास के पर्यावरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि महाविद्यालय, खंडवा का परिसर केवल पौधों की विविधता के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहाँ जीव-जंतुओं की विविधता भी खूब है। इसी परिसर में नेवला भी देखा जाता है। खेतों में इसकी मौजूदगी न केवल फसलों की रक्षा करती है, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में भी मदद करती है।

कृषि में उपयोगिता

नेवला खेतों के लिए एक छोटे, पर बहुत महत्वपूर्ण रक्षक की तरह है। यह चूहों, छोटे कीट और कभी-कभी साँपों का शिकार करता है। इससे फसलों को नुकसान नहीं होता और किसानों को प्राकृतिक सुरक्षा मिलती है। उसकी उपस्थिति खेतों में रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता भी कम करती है, जिससे मिट्टी और पर्यावरण दोनों सुरक्षित रहते हैं।

पारिस्थितिकी में योगदान

नेवला खेतों में जैविक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह खुद कुछ बड़े शिकारी जीवों के लिए भोजन बनता है और छोटे कीटों की संख्या को नियंत्रित करता है। इसके शिकार से पैदा होने वाला जैविक कचरा मिट्टी की उर्वरता को भी बढ़ाता है।

शत्रु और शिकार

नेवले के प्राकृतिक शत्रु बड़े पक्षी जैसे बाज और उल्लू, कभी-कभी लोमड़ी या कुत्ते होते हैं। इसके शिकार में छोटे कीट, रॉडेंट्स और कभी-कभी पक्षियों के अंडे शामिल होते हैं। यही कारण है कि नेवला खेतों में संतुलन बनाए रखने वाला एक कुशल रक्षक कहलाता है।

रोचक बातें

नेवला छोटे आकार का होते हुए भी बहुत तेज और चतुर है। यह विषैले साँपों से भी लड़ सकता है। बुंदेलखंड और मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में इसे नखला कहा जाता है। कभी-कभी लोग इसे 'छोटा सर्प भक्षक' भी कहते हैं। खेतों में इसकी मौजूदगी यह बताती है कि वहां जैविक संतुलन और प्राकृतिक रक्षा अच्छी तरह काम कर रही है। इनके संरक्षण के लिए और शोध की आवश्यकता है, ताकि इनके आवास और व्यवहार को समझा जा सके और संरक्षण प्रयासों को प्रभावी बनाया जा सके।

निष्कर्ष

नेवला खेतों का एक निडर और भरोसेमंद मित्र है। यह फसलों की रक्षा करता है, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखता है और प्राकृतिक संतुलन में मदद करता है। कृषि महाविद्यालय, खंडवा जैसे स्थानों में इसकी उपस्थिति जैव विविधता की पुष्टि करती है और यह दिखाती है कि इसे संरक्षण की आवश्यकता है।

बकरियों का पौष्टिक आहार

बकरी एक रोमंथी पशु हैं। उसके खानपान की आदतें अन्य पशुओं से भिन्न होती हैं। वह खोजी स्वभाव की होती हैं अतः जंगल में चराई हेतु भेजने पर दौड़ती रहती हैं। उसे घांस के मुकाबले पेड़ तथा खंखाड की पत्तियां खाना ज्यादा पसंद होता है। चराई के दौरान वह एक वनस्पति के पास जाकर कुछ पत्तियां खींचकर मुंह में भर लेती हैं लेकिन कुछ ही समय पश्चात दूसरे वनस्पति की और दौड़ पड़ती हैं और वहां जाकर उस पर कुछ देर मुंह मारती हैं। वह बहुत ही चंचल स्वभाव की होती हैं। अगर उसे कुछ दूरी पर किसी अन्य वनस्पति पर चंद अन्य बकरियां चरती हुई नजर आये तो वह भी उस वनस्पति की और दौड़ पड़ती है तथा जल्दबाजी में उस पर चराई शुरु कर देती हैं। फिर कुछ ही मिनटों या यहां तक की पलों में उसका उस वनस्पति से दिल भर गया तो अन्य वनस्पति की ओर दौड़ पड़ती हैं।

जिद्दी स्वभाव

जो वनस्पति उसे पसंद आ जाती है उसे वह कुछ ज्यादा देर तक खाती है। लेकिन इसका भी कोई भरोसा नहीं । वह जिद्दी स्वभाव धारी पशु हैं। अतः उसका दिल करें तो वह एक विशिष्ट वनस्पति पर चराई करेगी तथा जिस पल उसका दिल उस वनस्पति से भर जाये तब दूसरी वनस्पति की ओर चल देती है।

झुंड में रहना

बकरियां अक्सर झुंड में रहना तथा झुंड में रहकर साथ-साथ चरना पसंद करती हैं। उन्हे अकेले रहना कतई पसंद नहीं होता। अगर किसी ने ऐसी कोशिश की तो वह मायूस होकर, सहमकर या तो खड़ी रहती हैं या जमीन पर बैठ भी सकती हैं तथा चराई बंद कर देती है। कई बार वह भूखी होते हुए भी चराई नहीं करती है। उसे खेत में वनस्पतियों से भरे मैदान में अकेले बांधकर रखें भी तो वह ऐसा ही बर्ताव दर्शाती हैं। उन्हें झुंड से अलग करने पर वह बेचैन हो जाती है तथा उनके गले में रस्सी बांधकर उन्हे अन्य जगह ले जाने का प्रयास करें तो वे डर जाती हैं तथा सहमकर बैठ जाती है। कई बार इधर-उधर भागने की कोशिश करती हैं तथा नाकामयाब होने पर मायूस होकर एक जगह हताश होकर बैठ जाती हैं।

मर्जी की मालिक

ऐसी स्थिति में उन्हें कोई कुछ खिलाना भी चाहे तो वह उसे नहीं खाती। यहां तक कि उनकी मनपसंद पत्तियां भी खाने हेतु पेश की जाये तो भी वह उसे नहीं खाती। उन्हें जबरदस्ती चारा नहीं खिलाया जा सकता । वे अपनी मर्जी की मालिक होती है। उनके सामने किसी बर्तन में खाने योग्य पत्तियां डालने पर भी वह उसे नहीं छूती। अगर कोई पत्तियां या चारा जमीन पर गिर जाये तो वह उसे नहीं छूती। उसे गीला, मटमैला, कीचड़ भरा चारा कतई पसंद नहीं होता। उन्हे वही-वही चारा पसंद नहीं होता।

बकरी एक रोमंथी पशु है। उसके खानपान की आदतें अन्य पशुओं से भिन्न होती हैं। वह खोजी स्वभाव की होती है अतः जंगल में चराई हेतु भेजना पर दौड़ती रहती है। उसे घांस के मुकाबले पेड़ तथा खंखाड़ की पत्तियां खाना ज्यादा पसंद होता है।

उन्हे खाने में हमेशा बदलाव पसंद है। एक बार उन्होने कोई विशिष्ट चारा ग्रहण किया तो अगली बार यह जरुरी नहीं कि वह चारा दुबारा खाएगी। यहां तक कि एक बकरी को जो चारा पसंद आये वह दूसरी बकरी को पसंद आ जायेगा। हर एक की पसंद अलग-अलग होती है।

जोधपुर में शोध

केंद्रीय मरु अनुसंधान संस्थान जोधपुर के तहत कार्यरत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, पाली मारवाड़ राजस्थान मे किए गए अध्ययन में ज्ञात हुआ कि गर्मियों में जब चरागाह में कोई चारा या घांस उपलब्ध नहीं होता तब जो भी चारा मिले उसे मारवाड़ी नस्ल की बकरियां खा लेती हैं। यहां तक की भूखी होने पर बाड़ में लगी बेर की सूखी कंटीली टहनियां भी खा जाती हैं । जनवरी तथा फरवरी माह में जब चारागाह में काफी हरी वनस्पतियां मौजूद होती हैं। तब उनके खानपान-व्यवहार का गहन अध्ययन करते हुए ज्ञात हुआ कि मारवाड़ी बकरियों ने सबसे ज्यादा यानि बेरी के खंखाड़ों पर 55.79 प्रतिशत समय बिताया और उसकी पत्तियां खाई। इसके बाद उनकी दूसरी पसंद खेजड़ी की पत्तियां थीं जिस पर उन्होंने 24.30 प्रतिशत समय बिताया। इसके बाद उनकी तीसरी पसंद जिजनी नामक कंटीली फलीधारी वनस्पति थी जिस पर उन्होंने 5.69 प्रतिशत समय बिताया। इसके बाद उन्होंने रोहिडा वनस्पति पर 4.59 प्रतिशत, कैर वनस्पति पर, 4.50 प्रतिशत तथा देशी बबूल की पत्तियों पर 1.99 प्रतिशत समय बिताया।

बकरियों की कुछ शारीरिक विशेषताएं होती हैं। वे छरहरी पतली, तथा हल्के शरीरधारी होती हैं। वे तेज दौड़ सकती है तथा पिछले दो पैरों पर खड़ी होकर ऊंचाई पर स्थित वनस्पति की चराई कर सकती है।

उनके ऊपरी होंठ में एक दरार होती है तथा जीभ लंबी होती है जिनकी मदद से वह छोटे से छोटा पत्ता भी पकड़कर आसानी से खा सकती है। वह हमेशा जल्दबाजी में चरती है तथा कुछ देर पश्चात पेट भरने पर किसी पेड़ की छाया में आराम से बैठकर जुगाली करती हैं। बकरियों के खानपान व्यवहार पर कुछ अनुसंधान हुआ है जिनके शोध परिणामों पर आधारित जानकारी अनुसार उन्हें कुछ वनस्पतियां जैसे बेर, खेजड़ी, जिजनी, रोहिड़ा, देशी बबूल, जंगल जलेबी, आडू, पीपल, करंज गिरीपुष्प, सावरी, अशोक, इमली, चिंचबिलाई आदि वनस्पतियों की पत्तियां खाना पसंद करती हैं। इसके अलावा उन्हे बेर के फल (बेरियां), बबूल की फलियां, खेजड़ी की फलियां, कैर के फल, रोहिड़ा के फूल आदि खाना पसंद हैं। इसके अलावा उन्हे स्वादिष्ट, रसीली, हरीभरी घांस जैसे बरसीम, लूसर्न, चौलाई तथा स्वादिष्ट अनाज खाना पसंद होता हैं। अतः उन्हें उपरोक्त लिखित वनस्पतियों की पत्तियां, फूल, फल तथा घासफूस जो भी पसंद हैं वह खिलाये जायें तो उनका चाराग्रहण तथा शुष्क पदार्थो का ग्रहण ज्यादा होगा।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

• डॉ. आर. एस. सेंगर • गरिमा शर्मा
• डॉ. शालनी गुप्ता • डॉ. निधि सिंह
पादप जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

खाद्य सुरक्षा में 'पैक्स' के लिए शासन तंत्र

भारत में खाद्यान्न भंडारण नेटवर्क को मजबूत करने के लिए कई योजनाएँ और संस्थाएँ सक्रिय हैं। इनमें कृषि अवसंरचना कोष (AIF), पीएमएफएमई (PMFME), उप मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मेकेनाइजेशन (SMAM/AMI), राष्ट्रीय कोल्ड चेन विकास योजना, NCDC, नाबार्ड आदि प्रमुख हैं। AMI योजना पैक्स के गोदाम भवनों के लिए 33 प्रतिशत सब्सिडी देती है। AMI के तहत किसानों और पैक्स को 2 करोड़ रुपये तक 7 वर्षों के लिए 3 प्रतिशत ब्याज अनुदान उपलब्ध कराया जाता है, जबकि नाबार्ड अतिरिक्त ब्याज सब्सिडी भी प्रदान करता है।

इस परियोजना का लक्ष्य सशक्त, विकेन्द्रीकृत और सदस्य-प्रबंधित भंडारण नेटवर्क बनाना है, जिससे कटाई के बाद होने वाले नुकसान कम हों और किसानों को बेहतर मूल्य मिले। हालांकि, समन्वय, समय पर धन उपलब्धता और भूमि की उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। इसे हल करने के लिए सहकारिता मंत्रालय एक एकल खिड़की प्रणाली के माध्यम से क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगा।

पैक्स के लिए क्षमता निर्माण

'पैक्स' के सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आवश्यक हैं। इनसे वे स्थानीय स्तर पर भंडारण अवसंरचना स्थापित, सुरक्षित खाद्यान्न भंडारण और प्रभावी संचालन कर सकेंगे।

प्रशिक्षण में इन्वेंट्री प्रबंधन, गुणवत्ता मूल्यांकन, डिजिटल खरीद प्लेटफॉर्म और नियामकीय अनुपालन शामिल होंगे। इससे सामुदायिक स्तर पर पेशेवर टीम तैयार होगी, जो अवसंरचना का कुशल संचालन कर खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करेगी।

भूमि समूहण तंत्र

स्थानीय स्तर पर पैक्स के लिए गोदाम निर्माण में भूमि अधिग्रहण चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर धनी इलाकों में। इसे आसान बनाने के लिए गांव पंचायतों से परामर्श कर छोटे भूखंडों को एकत्रित (पूलिंग) करना जरूरी है। इससे स्थानीय भंडारण अवसंरचना शीघ्र और प्रभावी रूप से विकसित की जा सकेगी।

सरलीकृत वित्तपोषण तंत्र

पैक्स की वित्तीय क्षमता का मूल्यांकन पहले किया जाना चाहिए। संस्थागत निकाय ब्याज में छूट, सब्सिडी और क्रेडिट गारंटी जैसी सुविधाएँ प्रदान करते हैं, लेकिन पैक्स को दीर्घकालिक संचालन योजना तैयार करनी होगी। पैक्स को संचालन, मानव संसाधन, जवाबदेही और जोखिम प्रबंधन का मूल्यांकन करना चाहिए। इस तैयारी से पैक्स की भागीदारी बढ़ेगी और योजना की सफलता सुनिश्चित होगी।

डिजिटलीकरण और AI आधारित निगरानी

पैक्स का कंप्यूटरीकरण और डैशबोर्ड निगरानी प्रदर्शन, पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने में मदद करेगा। डिजिटलीकरण और AI के माध्यम से डेटा आधारित निर्णय लिए जा सकेंगे और पैक्स की कार्यक्षमता में सुधार होगा।

भारत सरकार ने एक संस्थागत ढांचा तैयार किया है—अंतर-मंत्रालयी समिति कार्यक्रम की प्रगति देखती है, राज्य सहकारी विकास समितियाँ कार्यान्वयन की निगरानी करती हैं, और जिला स्तर पर जिला समितियाँ योजना के सुचारू क्रियान्वयन की जिम्मेदारी संभालती हैं।

खाद्य सुरक्षा सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए सबसे अहम मुद्दों में से एक है। यह सिर्फ़ बाज़ार में अनाज की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि आम लोग इन्हें आसानी से खरीद और इस्तेमाल कर पाएँ।

जन-जागरूकता और पैक्स पहल

भंडारण अवसंरचना की सफलता में किसानों की भागीदारी बेहद जरूरी है। इसके लिए जन-जागरूकता अभियान चलाकर उन्हें भंडारण और खरीद प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा। इससे योजना की स्वीकार्यता और प्रभावशीलता बढ़ेगी।

पैक्स द्वारा खाद्य सुरक्षा पहल ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत भंडारण नेटवर्क तैयार करेगी। यह बफर स्टॉक और नियंत्रित भंडारण से फसल कटाई के बाद नुकसान कम करेगी, स्टॉक प्रबंधन सुधारती है और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को दक्ष बनाती है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से पैक्स सीधे किसानों और सरकारी एजेंसियों से जुड़ेंगे। प्रभावी भंडारण और संचालन से किसानों को बेहतर मूल्य मिलेगा, ग्रामीण आजीविका मजबूत होगी और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद मिलेगी।

विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना

मुख्य उद्देश्य

- स्थानीय भंडारण क्षमता बढ़ाकर अनाज की बर्बादी और परिवहन लागत कम करना।
- बिचौलियों पर निर्भरता घटाकर किसानों को बेहतर मूल्य दिलाना।
- कृषि अवसंरचना के विकास के माध्यम से ग्रामीण रोजगार के अवसर बढ़ाना।

यह योजना किसानों को सशक्त बनाएगी और ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करेगी।

पैक्स के माध्यम से खाद्य सुरक्षा

'पैक्स' यानी किसानों के सहकारी संगठन, देशभर में खाद्यान्न भंडारण क्षमता स्थापित करके खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तैयार हैं। डिजिटल तकनीक और योजनागत ढांचा उन्हें खरीद प्रक्रिया की लंबी चुनौतियों को कम करने में मदद करेगा।

गांव स्तर पर विकेन्द्रीकृत भंडारण से किसानों की पहुँच बढ़ेगी, परिवहन लागत और कटाई के बाद हानि कम होगी। सुनियोजित शासन प्रणाली और सरकार के समर्थन से पैक्स सक्षम संस्थाओं के रूप में विकसित होंगे, जो भंडारण प्रबंधन, फसल की सुरक्षा और किसानों को बेहतर मूल्य सुनिश्चित करेंगे। यह पहल खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने, अवसंरचना आधुनिकीकरण और ग्रामीण समुदायों के लिए स्थायी लाभ देने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

किसानों को जीरो ब्याज दर पर मिलता रहेगा कृषि ऋण

मंत्रि-परिषद के निर्णय

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक में वर्ष 2025-26 के लिए सहकारी बैंकों के माध्यम से शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर कृषकों को अल्पावधि फसल ऋण दिये जाने की योजना को निरंतर रखे जाने की स्वीकृति प्रदान की गयी। खरीफ 2025 सीजन की ड्यू डेट 28 मार्च, 2026 और रबी 2025-26 सीजन की ड्यू डेट 15 जून 2026 रखी गयी है। वहीं एक अन्य बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि भावांतर और सोलर पंप योजना प्रमुख हैं। किसानों को इन योजनाओं की प्रक्रिया में कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए और अधिकारियों एवं प्रशासन को हर कदम पर किसानों की मदद करनी चाहिए।

खरीफ एवं रबी सीजन की निर्धारित तिथि (ड्यू डेट) तक ऋण की अदायगी करने वाले किसानों से प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) द्वारा 3 लाख रूपये तक के दिये गये अल्पावधि फसल ऋण पर कोई ब्याज नहीं लिया जायेगा। राज्य शासन द्वारा सभी किसानों के लिए 1.5 प्रतिशत सामान्य ब्याज अनुदान और निर्धारित ड्यू डेट तक ऋण की अदायगी करने वाले किसानों को 4 प्रतिशत प्रोत्साहन स्वरूप अतिरिक्त ब्याज अनुदान दिया जायेगा। वर्तमान वर्ष में 23 हजार करोड़ रूपये वितरण का लक्ष्य रखा गया है।

9 लाख से अधिक सोयाबीन किसानों ने कराया पंजीयन : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कृषि अधिकारियों की बैठक में कहा कि प्रदेश में किसानों की मदद के लिए शुरू की गई भावांतर योजना ने अब तक शानदार प्रतिक्रिया प्राप्त की है। योजना में कुल 9.36 लाख किसानों ने पंजीयन करवाया है, जो योजना की सफलता का स्पष्ट प्रमाण है। मुख्यमंत्री ने बैठक में निर्देश दिया कि योजना की पूरी प्रक्रिया में किसानों को कोई भी समस्या नहीं आनी चाहिए। इसके लिए सभी मंडियों और उपमंडियों में पर्याप्त व्यवस्था की जाए और किसानों को सभी आवश्यक जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि ई-उपार्जन पोर्टल के माध्यम से किसानों के बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से निर्धारित समय सीमा के भीतर भुगतान किया जाए। साथ ही, भुगतान की जानकारी किसान को एसएमएस के माध्यम से दी जाए।

इसके अतिरिक्त, मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में किसानों के लिए सोलर पंप योजना के तहत किए गए प्रयासों की भी सराहना की। इस योजना के माध्यम से किसानों को सौर ऊर्जा आधारित पंप उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे उन्हें सिंचाई में सुविधा मिलेगी और ऊर्जा की बचत होगी।

धान, ज्वार, बाजरा खरीदी के लिए 8 लाख से अधिक किसानों ने कराया पंजीयन

भोपाल (कृषक जगत)। समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार, बाजरा उपार्जन के लिए इस वर्ष 8 लाख 53 हजार 911 किसानों ने पंजीयन कराया है। पिछले वर्ष 7 लाख 84 हजार 845 किसानों ने पंजीयन कराया था। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि इस वर्ष विगत वर्ष की तुलना में लगभग 69 हजार अधिक किसानों ने पंजीयन कराया है। धान उपार्जन के लिये 8 लाख 47 हजार 830, ज्वार के लिये 2601 और बाजरा के लिये 5 हजार 545 किसानों ने पंजीयन कराया है। उन्होंने बताया है कि धान का समर्थन मूल्य 2369 रूपये, ज्वार का 3699 और बाजरा का 2775 रूपये है। श्री राजपूत ने बताया कि पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत एवं तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्रों पर और एम.पी. किसान एप पर की गई थी।

कुशल पशुधन प्रबंधन के लिए डिजिटल प्लेटफार्म जरूरी

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन पर कार्यशाला

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन के कार्यान्वयन में तेज़ी लाने के लिए पशुपालन एवं डेयरी सचिव श्री नरेश पाल गंगवार की अध्यक्षता में नई दिल्ली में राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (एनडीएलएम) विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें कुशल पशुधन प्रबंधन और सेवा वितरण के लिए भारत पशुधन जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों का लाभ उठाने पर विशेष बल दिया गया। पशुपालकों के बीच डिजिटल साक्षरता बढ़ाने, ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने और सभी प्रशासनिक स्तरों पर प्रभावी डेटा उपयोग करने पर विचार-विमर्श किया गया।

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन का उद्देश्य नस्ल सुधार, रोग निगरानी और उत्पाद ट्रेसबिलिटी में सहायता के लिए एक किसान-केंद्रित डिजिटल इको-सिस्टम स्थापित करना है। भारत पशुधन प्लेटफॉर्म पर 9.4 करोड़ से अधिक पशुपालक और 34.5 करोड़ पशु पहले ही पंजीकृत हो चुके हैं, जो व्यापक पशुधन डिजिटलीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

इस कार्यशाला में पशुपालन एवं डेयरी विभाग की अतिरिक्त सचिव सुश्री वर्षा जोशी, पशुपालन आयुक्त डॉ. प्रवीण मलिक, पशुपालन आयुक्त श्री राम शंकर सिन्हा और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। इस कार्यशाला में 7 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

फोटो गैलरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौसैनिकों के साथ दीपावली मनाई। इस अवसर पर उन्होंने आईएनएस विक्रांत पर स्टीमपास्ट और फ्लाईपास्ट का अवलोकन किया।

इंदौर के हातौद में रेशम केंद्र खजूरिया गौशाला में गोवर्धन पूजा के दौरान गौवंश का पूजन कर उसे दुलार करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को दीपावली पर पुष्पगुच्छ भेंट कर खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शुभकामनाएं दीं।

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन की अध्यक्षता में म.प्र. की आर्थिक प्रगति के संबंध में मंत्रालय में बैठक हुई। बैठक में 'ग्रोथ हब' पहल का औपचारिक शुभारंभ किया। इस अवसर पर नीति आयोग के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व प्रिंसिपल इकोनॉमिक एडवाइजर सुश्री एना रॉय ने किया।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

किसानों ने देखा धन-धान्य योजना का प्रसारण

छिन्दवाड़ा (कृषक जगत)। 'प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि और दलहन मिशन' योजना का प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुभारंभ किया गया। जिसका लाइव टेलीकास्ट कृषि विज्ञान केंद्र छिंदवाड़ा में किया गया।

इस अवसर पर सांसद श्री बंटी विवेक साहू, श्री मेर सिंह चौधरी प्रांत मंत्री भारतीय किसान संघ, श्री संजय सक्सेना किसान मोर्चा, श्री कमलेश उइके जिला पंचायत सदस्य प्रांत मंत्री, श्री जागेंद्र अलडक, श्री राजू नरोट,श्री संतोष पटेल, श्री संजय पटेल, श्री मदन लाल साहू, श्री शैलेन्द्र पटेल आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रिया ठाकुर एवं श्रीमती चंचल भार्गव ने किया। उप संचालक कृषि श्री जितेन्द्र कुमार सिंह एवं कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. डी. सी. श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की उपयोगिता एवं रूपरेखा अतिथियों से साझा की। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन डॉ. सरिता सिंह ने किया। कार्यक्रम में उपसंचालक उद्यानिकी श्री एम. एल. उईके, उपसंचालक पशुपालन डॉ. पक्षवार, मत्स्य विभाग के श्री अंबुलकर, नाबार्ड से श्रीमती श्वेता सिंह, एसडीओ कृषि श्री नीलकंठ पटवारी, सहायक संचालक कृषि श्री दीपक चौरसिया अभियांत्रिकी विभाग की श्रीमती अश्विनी सिंह, एसएडीओ श्री अवस्थी, श्री घाघरे सहित किसान उपस्थित रहे।

प्रगतिशील कृक श्री पूरनलाल इनवाती ग्राम भूमका हर्रई को प्राकृतिक खेती में उत्कृष्ट कार्य हेतु एवं श्री प्रवेश रघुवंशी ग्राम चांद को नरवाई प्रबंधन हेतु उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया गया।

जैविक और समन्वित खेती के प्रेरणास्रोत बने रामचरण

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। जिले के विकासखंड बिछुआ के ग्राम खमारपानी के कृषक श्री रामचरण झाडु ने यह साबित कर दिखाया है कि सही मार्गदर्शन और मेहनत से खेती को न केवल लाभकारी बल्कि टिकाऊ भी बनाया जा सकता है। शासन की आत्मा परियोजना एवं कृषि विभागीय अधिकारियों के सहयोग से उन्होंने परंपरागत खेती से आगे बढ़कर फसल विविधिकरण और समन्वित कृषि को अपनाया। आज वे जैविक खेती और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए अपने गांव में प्रेरणास्रोत बन चुके हैं।

जैविक खेती की ओर कदम - श्री रामचरण झाडु पिछले कई वर्षों से गेहूं, चना, मक्का और सोयाबीन जैसी पारंपरिक फसलों की खेती कर रहे थे। रासायनिक खाद और दवाइयों पर अधिक निर्भरता के कारण उनकी लागत लगातार बढ़ रही थी और खेत की उर्वराशक्ति भी कम हो रही थी। लगभग चार वर्ष पूर्व आत्मा परियोजना से जुड़ने के बाद उन्होंने कृषि विभागीय मार्गदर्शन में जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाया और तीन एकड़ क्षेत्र में रासायनिक खेती छोड़ दी। तकनीकी मार्गदर्शन एवं शासन से मिली सहायता से उन्होंने फसल चक्र, फसल विविधीकरण, समन्वित खेती और नरवाई प्रबंधन को अपनाया। पिछले वर्ष से वे सुपर सीडर जैसी आधुनिक तकनीकों का भी उपयोग कर रहे हैं। आज उनके पास 11 एकड़ भूमि के साथ-साथ 2 देसी नस्ल की गिर गाय भी है। पशुपालन से प्राप्त गोबर और गौमूत्र का उपयोग कर वे खेतों में जैविक खाद एवं दवाइयां तैयार करते हैं। फसल चक्र के तहत पारंपरिक फसलों के साथ स्वीट कॉर्न, टमाटर और धनिया की खेती भी कर रहे हैं। स्वीट कॉर्न की फसल से उन्हें 35-40 रुपये प्रति किलो की दर से लगभग 1 लाख 20 हजार रुपये का लाभ मिला। साथ ही अंतरवर्तीय फसल से अतिरिक्त आमदनी भी हुई।

लाभ और उपलब्धियां - जैविक पद्धति अपनाने से उनकी लागत घटी और आमदनी में वृद्धि हुई। आज वे जीवामृत, नीमास्त्र जैसी जैविक दवाइयाँ स्वयं बनाकर खेतों में उपयोग कर रहे हैं। खेती और पशुपालन के सम्मिलित प्रयासों से उनकी वार्षिक आय 5 से 8 लाख रुपये तक पहुँच चुकी है। वर्ष 2017-18 में उन्हें विकासखंड स्तरीय सर्वोत्तम पशुपालन कृषक पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। जैविक खेती वह पद्धति है जिसमें रासायनिक खाद और दवाइयों का प्रयोग नहीं किया जाता, बल्कि गोबर, गौमूत्र, कंपोस्ट, हरी खाद और जैविक कीटनाशकों का उपयोग कर मिट्टी की उर्वरक शक्ति को बढ़ाया जाता है। इस पद्धति से उपजाई गई फसलें न केवल स्वास्थ्यवर्धक होती हैं बल्कि लंबे समय तक भूमि की उत्पादकता भी बनी रहती है। आत्मा परियोजना और कृषि विभागीय अधिकारियों के निरंतर मार्गदर्शन से उन्हें समय-समय पर तकनीकी जानकारी, प्रशिक्षण एवं संसाधनों की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

इंदौर संभाग में 1 लाख 45 हजार से अधिक किसानों ने कराया सोयाबीन का पंजीयन

इंदौर (कृषक जगत)। राज्य शासन की भावांतर भुगतान योजना के तहत सोयाबीन फसल के लिए किसानों का पंजीयन कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इस वर्ष किसानों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए अपने रकबे का पंजीयन कराया है। इंदौर संभाग के आठों जिलों में कुल 432 पंजीयन केंद्रों पर 1,45,188 किसानों ने सोयाबीन भावांतर योजना में अपना पंजीयन कराया है।

कृषि विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार इंदौर जिले में 61 पंजीयन केंद्रों के माध्यम से 46,061 किसानों ने योजना में पंजीयन कराया है। जिले में सोयाबीन बोनी का कुल रकबा 2,41,236 हेक्टेयर है, जिसमें से 1,22,809 हेक्टेयर रकबा पंजीकृत हुआ है, जो कुल बोवनी का 50.91 प्रतिशत है। धार जिले में 80 केन्द्रों पर 37,940 किसानों ने पंजीयन कराया है। यहां कुल बोवनी का रकबा 2,97,859 हेक्टेयर है, जिसमें से 1,06,464 हेक्टेयर पंजीकृत हुआ है, जो 35.74 प्रतिशत है। खंडवा जिले में 73 केंद्रों पर 20,001 किसानों ने पंजीयन कराया है। कुल 1,88,491 हे. बोनी रकबे में से 46,652 हे. रकबा पंजीकृत (24.75%) हुआ है।

बड़वानी जिले में 47 केन्द्रों पर 13,455 किसानों द्वारा पंजीयन कराया गया। जिले में 20,741 हेक्टेयर में बोवनी हुई, जिसमें से 15,592 हेक्टेयर रकबा पंजीकृत हुआ है। यह अनुपात 75.18 प्रतिशत है, जो संभाग में सर्वाधिक है। इसी तरह खरगोन जिले में 75 केन्द्रों पर 13,364 किसानों ने पंजीयन कराया। यहां कुल बोवनी का रकबा 89,107 हेक्टेयर है और 24,799 हेक्टेयर रकबा (27.83%) पंजीकृत हुआ है। झाबुआ जिले में 10,478 किसानों ने 50 केन्द्रों पर पंजीयन कराया। कुल 72,488 हेक्टेयर में से 13,578 हेक्टेयर (18.73%) रकबा पंजीकृत हुआ।

बुरहानपुर जिले में 24 केन्द्रों पर 2,534 किसानों ने पंजीयन कराया है। कुल 11,000 हेक्टेयर बोवनी में से 4,411 हेक्टेयर (40.10 प्रतिशत) रकबा पंजीकृत हुआ है। आलीराजपुर जिले में 22 केन्द्रों पर 1,355 किसानों ने पंजीकरण कराया। कुल 39,209 हेक्टेयर में से 1,215 हेक्टेयर (3.10%) रकबा पंजीकृत हुआ है।

कृषि विभाग ने बताया कि पंजीकृत किसानों को भावांतर भुगतान का लाभ नियमानुसार उपलब्ध कराया जाएगा। किसान 24 अक्टूबर से 15 जनवरी 2026 तक सोयाबीन मंडियों में विक्रय कर सकेंगे।

पर्यावरण चेतना के लिए समर्पित सांखला

पांच दशकों से पौधों का नि:शुल्क वितरण जारी

इंदौर (कृषक जगत)। ग्राम/ नगर विकास के लिए जहां एक ओर हरे-भरे वर्षों पुराने पेड़ों को काटने का फैसला पल भर में ले लिया जाता है, वहीं श्री सुरेश सांखला जैसे पर्यावरण प्रेमी भी हैं, जो विगत पांच दशकों से अपने स्वयं के व्यय से पौधे खरीद कर लोगों को पौधों का नि:शुल्क वितरण कर रहे हैं। पर्यावरण के प्रति चेतना जगाने के इनके एकाकी अभियान से जब रोपे गए पौधे विराट वृक्ष बन जाते हैं, तो इससे मिलने वाली प्रसन्नता ही इनका पारितोषिक हो जाता है।

इंदौर में चाणक्यपुरी चौराहे पर स्थित हनुमान मंदिर के सामने सड़क पार करने पर कोने में एक छोटी सी सब्जी की दुकान है। इससे अपना जीविकोपार्जन करने वाले 58 वर्षीय श्री सुरेश सांखला ने बताया कि वे मूलत: ग्राम बरगाड़ी तहसील बड़नगर जिला उज्जैन के निवासी हैं। पौधारोपण की प्रेरणा चौथी कक्षा में पढ़ने के दौरान शिक्षक द्वारा स्कूल में लगवाए गए पीपल, नीम और बरगद के तीन पेड़ों से मिली थी। इनमें से दो बड़े पेड़ बन गए हैं। इसके बाद रुनिजा के बाबा रामदेव महाराज होकम के आशीर्वाद से यह सिलसिला चल पड़ा। गांव में श्री लक्ष्मण दास जी महाराज के सानिध्य में कई साल बिताए। सियाराम आश्रम/ मंदिर परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में कई पौधे लगाए और नि:शुल्क वितरित भी किए। 18 साल पहले इंदौर आ गए। तब से यहां भी नि:शुल्क पौधे वितरित किए जा रहे हैं।

श्री सांखला ने बताया कि वे आम, जाम, नीम, बिल्व पत्र, पीपल, अशोक, फालसा, खजूर और औषधीय पौधों का नि:शुल्क वितरण करते हैं। इन पौधों को स्थानीय सरकारी और निजी नर्सरियों से स्वयं के व्यय से खरीदते हैं, जिसकी प्रति पौधा न्यूनतम दर 30 रु. से शुरू होती है। इंदौर में सामने हनुमान मंदिर, स्कीम 103 स्थित नर्मदेश्वर महादेव मंदिर परिसर, चोइथराम मंडी क्षेत्र, केसरबाग रोड और निज निवास के सामने की खुली जमीन पर रोपे गए कई पौधों को आज पेड़ बनकर लहलहाते देख खुशी होती है। वृक्ष बने पौधों का जन्मदिन मनाकर उनका पूजन भी किया जाता है। गत दिनों हातोद की स्कूल में भी 50 पौधे स्वयं रोपकर आए हैं। पौधों के लिए जून से तैयारी शुरू हो जाती है। वर्षा काल से पौधों का वितरण शुरू होता है, जो देव प्रबोधिनी एकादशी तक चलता है। इस दौरान पौधों की परवरिश पर ध्यान देना पड़ता है, अन्यथा पौधे सूखने का डर रहता है। इनका कहना है कि राजा हो या रंक सभी को शुद्ध वायु की ज़रूरत होती है, अत: अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। पर्यावरण के लिए समाज में चेतना जगाने हेतु श्री सांखला का नि शुल्क पौधा वितरण का यह नि:स्वार्थ एकल प्रयास न केवल सराहनीय, बल्कि अनुकरणीय भी है। बिना किसी चाहत अथवा सम्मान के पर्यावरण शुद्धि का इनका यह वास्तविक अभियान पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण की फोटो खींचकर वाहवाही लूटने वाले कथित पर्यावरण प्रेमियों को आईना दिखा रहा है।

समस्या – मैं आपका नियमित सदस्य हूं, अरहर लगाई है 3–4 सालों बाद सफलता से बेहन लगा पाया हूं क्या इसमें सल्फर का स्प्रे किया जा सकता है?

– देवराज सिंह

समाधान– *आप अरहर की काश्त बेहन लगाकर करते हैं। उ.प्र. में शायद इसमें सफलता मिलती है हमारे यहां अरहर में बेहन का चलन प्रायः नहीं है। आपने सल्फर खाद के छिड़काव के विषय में पूछा है आपसे निवेदन है कि आप बाजार में उपलब्ध 19:19:19 नत्रजन–स्फुर–पोटाश या 20:20:20 का मिश्रण जो कि 1 किलो के पैकेट में आता है इसको घोल बनाकर छिड़काव करना अधिक लाभदायक होगा। एक किलो के पैकेट को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव एक बीघा में करें। जहां तक सिंचाई का प्रश्न है हल्की सिंचाई की जा सकती है। बशर्ते वर्तमान में पूर्वी उ.प्र. में आये हुदहुद के प्रभाव से वर्षा ना हुई हो तो अरहर को अतिरिक्त सिंचाई से हानि संभव है इसकी जड़ें लंबी होती हैं जो भूमिगत नमी को खींचने में कामयाब होती हैं।*

समस्या – मैंने संतरे का बगीचा लगाया है। एक वर्ष के पौध में कुछ सूख गये हैं, बाकी में पत्तियों पर पीलापन आ रहा है, उपाय बतायें।

–विनीत स्वामी

समाधान– *वर्तमान में प्रदेश में संतरा तथा*

अनार की ओर कृषकों का स्थान बढ़ रहा है। आपने एक वर्ष के पौधों में रखरखाव नहीं की यह उचित नहीं है, आप निम्न उपाय करें।

- *प्रत्येक पौधों में थाला बनाकर 10 किलो गोबर खाद, 250 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश डालें।*
- *कटाई/छंटाई करके तीन फीट से पौधे की शाखायें हटा दें।*
- *एक छिड़काव कापर सल्फेट 1 किलो, जिंक सल्फेट 1 किलो तथा चूना 1 किलो को अलग–अलग घोल बनाकर 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।*
- *तनों पर चूना अथवा बोर्डोपेस्ट का लेप लगाये।*
- *फल वृक्षों में नर्सरी से पौधे लाकर खेत में लगाते समय क्लोरोपायरीफास 5 ग्राम/गड्ढे डालें।*
- *प्रथम वर्ष में लगे पौध शत–प्रतिशत नहीं बढ़ पाते हैं। 10 प्रतिशत पौध प्राकृतिक रूप से सूख सकता है।*

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

समस्या– शरदकालीन गन्ना लगाना चाहता हूं, अच्छे उत्पादन के लिये प्रमुख कार्य बतायें।

– झुमकलाल पटेल

समाधान– *गन्ना एक लम्बी अवधि वाली फसल है इसलिये भूमि की तैयारी अच्छी तरह करें। आप निम्न बिंदुओं को अपनाकर अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।*

- *पहली जुताई अच्छे से की जाये इसके बाद हल से गहरी जुताई भी करें तथा रोटावेटर से मिट्टी भुरभुरी करें।*
- *3–3 फीट पर नालियां बनायें नाली 6–7 इंच गहरी हों।*
- *20 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से बीज डालें प्रत्येक गड्ढे में दो आंख से अधिक ना हो।*
- *टुकड़ों को क्लोरोपायरीफास 2 मि.ली. तथा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/लीटर के हिसाब से 50 लीटर पानी में डालकर घोल बनाकर 15 मिनट तक डुबोकर रखें।*
- *उपयुक्त जातियों में को.जे.64, को 94012, को. 86032, व्ही.एस. आई. 434, को.जे. 85 एवं को.सी. 671 लगाये।*
- *650 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 150 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश/हेक्टर की दर से डालें।*
- *सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति हेतु 25 किलो जिंक सल्फेट 25 किलो फेरस सल्फेट तथा 25 किलो मैग्नेशियम सल्फेट/हे.की दर डालें।*
- *नाली बनाने के बाद 100 क्विंटल गोबर खाद, 10 किलो एन्डोकाईमोरोजा तथा 7 किलो असीटोबेक्टर/एकड़ की दर से भी डालें।*

समस्या– सिंचित तथा अर्धसिंचित गेहूं में कब–कब सिंचाई देना चाहिये ताकि लाभ मिल सके।

– गुलाब सिंह

समाधान– *गेहूं में प्रमुख रूप से 6 सिंचाई विभिन्न क्रांतिक अवस्था में देना होता है उपलब्ध जल के हिसाब से निम्न उपाय करें।*

- *यदि 6 सिंचाई उपलब्ध है तो पहली सिंचाई बुआई के 21–24 दिनों बाद, दूसरी सिंचाई कल्ले निकलते समय, बुआई के 40 दिनों बाद, तीसरी सिंचाई फूल की स्थिति में 60–65 दिनों बाद, चौथी सिंचाई 75 से 80 दिनों बाद गभोट अवस्था में, पांचवी सिंचाई दानों में दूध भरने के बाद 105 दिनों बाद, छटवीं सिंचाई यदि आवश्यकता हो तो 110–155 दिनों बाद।*
- *यदि एक पानी हो तो बुआई के 21–24 दिनों बाद किरीट अवस्था में तथा दूसरी गभोट अवस्था में। यदि तीन सिंचाई उपलब्ध हो तो पहली किरीट अवस्था में दूसरी गभोट अवस्था में तथा तीसरी दानों में दूध भरते समय दी जाये।*

समस्या– फसल में बोने के समय सल्फर मिलाकर बोयें या तरल सल्फर छिड़काव करें क्या सल्फर से पैदावार बढ़ती है, कितना सल्फर डालें।

– प्रकाशचन्द माली

समाधान– *आपका प्रश्न सामयिक है प्रति उत्तर से अन्य कृषकों को भी लाभ मिल सकेगा। पहली बात तो यह है किसी भी प्रकार के उर्वरक को बीज के साथ मिलाकर कदापि बोनी ना की जाये। जहां तक गंधक के उपयोग का सवाल है मिट्टी की जांच के उपरांत ही यदि आपकी भूमि में इसकी कमी हो तो ही इसका उपयोग करें वैसे यदि स्फुर (फास्फेट) खाद में आप सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग करते हैं तो प्राकृतिक रूप से गंधक की पूर्ति हो जायेगी। उर्वरक में 11 प्रतिशत गंधक उपलब्ध रहता है। यदि अलग से उपयोग करना चाहें तो तिलहनी– दलहनी फसलों में 15–20 किलो गंधक/हे. की दर से बुआई पूर्व भूमि में मिलाकर किया जा सकता है।*

कृषक जगत बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050

नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य/शिक्षण

आ गया मौसम सेहतमंद होने का

ठंड ने दस्तक दे दी है। जो इन दिनों अपनी सेहत बनाना चाहते हैं उनके लिए पेश है कुछ आसान से स्वादिष्ट नुस्खे ताकि गुलाबी मौसम में उनका रंग-रूप निखर उठे।

- रोजाना 10-12 गिलास पानी पीना चाहिए, साथ ही नाश्ते के रूप में ऐसे पदार्थ लें, जिसमें प्रत्येक से 200 कैलोरी प्राप्त हो। नाश्ते में खड़ा अनाज उगाकर लें, चोकर से बना केक खाएं, चोकर में मेग्निशियम पर्याप्त होता है।
- आलू के दो पराठे के साथ लगभग 50 ग्राम दही का सेवन करें, यह ऊर्जा का अच्छा स्रोत है।
- आप चाहें तो उबला अंडा काली मिर्च भुरककर सेवन करें, अंडे के सफेद भाग में प्रोटीन भरपूर होता है और पीले भाग में अतिरिक्त विटामिन- बी होता है।
- एक मुट्ठी मूंगफली के दाने सेंककर, 10 ग्राम गुड़ के साथ-चबा-चबाकर नाश्ते के तौर पर सेवन करें, ये ऊर्जा का पर्याप्त भंडार हैं।
- अत: आप नाश्ते में कुछ भी मनमर्जी का न खाएं। खाएं तो ऐसी चीज खाएं, जिससे आपको एनर्जी मिले और पेट तथा आंतें भी कष्ट महसूस न करें।
- घी, छिलका सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शक्कर (बूरा) तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बाँध लें। प्रात: खाली पेट एक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा कुनकुना दूध घूंट-घूंट करके पीने से पुरूषों का शरीर सुडौल और बलवान बनता है।
- चना व गेहूं 11 किलो मिलाकर पिसवा लें और आटे को छाने बिना ही प्रयोग करें। 250 ग्राम आटे में घी का मोयन देकर इसमें कोई भी मनपसंद सब्जी बारीक-बारीक काटकर डालें, थोड़ा सा नमक, अजवायन और बारीक कटा हुआ प्याज वगैरह डालकर आटा गूँथ लें। इसकी मोटी-मोटी रोटी तवे पर ही घुमा-घुमाकर पकाएँ। अब इसमें कोंचा मारकर घी डालें और घी से तर-बतर करके खूब चबा-चबाकर गुड़ या किसी भी सब्जी के साथ खाएँ। यह बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक रोटी है, जिसकी पौष्टिकता का एक प्रमुख तत्व शुद्ध घी है। कोलेस्ट्रॉल के रोगी को घी के इन नुस्खों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

दस का दम, स्वस्थ रहें हम

- हर समय ताजा भोजन करें।
- एक निश्चित समय पर भोजन करें.
- अनियमित और बासी भोजन से दूर रहें।
- पानी ज्यादा से ज्यादा पिएं।
- रात का भोजन सोने से तीन घंटे पहले करें।
- खाना खाने के बाद 10 मिनट तक वज्रासन में बैठें।
- भोजन से पहले व तुरंत बाद पानी पीना हानिकारक है।
- गरिष्ठ तले, मसालेदार, खटाईयुक्त भोजन से परहेज करें।
- अंकुरित अन्न, सलाद, सूप का समावेश भोजन व नाश्ते में अवश्य करें।
- केक, पेस्ट्री, आइस्क्रीम, डिब्बाबंद भोज्य पदार्थों का सेवन कम से कम करें।

साग-सब्जियों में छिपा अच्छी सेहत का राज

मामूली समझ दरकिनार कर दी जाने वाली साग-सब्जियों को वैज्ञानिकों ने ज्यादा सेहतमंद करार दिया है। ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पॉलीमाउथ और इंस्टीट्यूट ऑफ फूड, ब्रेन एंड बिहैवियर के वैज्ञानिकों के अनुसार, 19वीं सदी में लोग सामान्य साग-सब्जियों व फलों का ज्यादा इस्तेमाल करते थे। इससे वे सेहतमंद रहते थे क्योंकि इनमें शरीर के लिये सभी आवश्यक तत्व पाए जाते हैं।

19वीं सदी का आहार आज भी कारगर

- पांच हजार कैलोरी रोजाना ग्रहण करने के बावजूद लोगों की पाचनशक्ति रहती थी दुरूस्त
- साग, प्याज, गोभी, चुकंदर, जलकुंभी जैसी सब्जियां व सेब, चेरी जैसे फल खाते थे लोग।
- मछली और मांस भी उल्लेखनीय मात्रा में भोजन में शामिल थे, जो बेहद पोषक होते हैं।

धूम्रपान से परहेज

- खेतों और कारखानों में कामगार लोग धूम्रपान और शराब से परहेज करते थे।
- शकरकंद जैसे कंदमूल का इस्तेमाल करने से प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक रहती थी।
- यीस्ट युक्त ब्रेड खाने से भी लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मिलती थी मजबूती।

इलाज की कम जरूरत

व्यक्ति अपने जीवन का करीब एक दशक इलाज के भरोसे गुजारता है। पुरूष में यह आंकड़ा 7.7 वर्ष व महिला के लिये 10 साल है। पर राबॉथम का मानना है कि 19 वीं सदी में लोग ज्यादा सेहतमंद होते थे। क्योंकि उनके खानपान में हरी सब्जियां, फल व मांस शामिल होता था।

ठंड के चार साथी मूंगफली, तिल, खजूर और गुड़

__मूँगफली__ – आयुर्वेद की मान्यता है कि मूँगफली का तेल गुणों में जैतून के तेल के समान होता है। मूँगफली का तेल मूंगफली – आपकी पाचनशक्ति बढ़ाता है। यह घावों को भरने और चेहरे की चमक बढ़ाने में भी सहायक होता है। मूँगफली में तेल, प्रोटीन, विटामिन बी-1, बी-2 और विटामिन-ई प्रचुरता में उपलब्ध होते हैं। मूँगफली बरफी बनाकर इसे आसानी से अपने भोजन में शामिल कर सकते हैं। मूँगफली बरफी

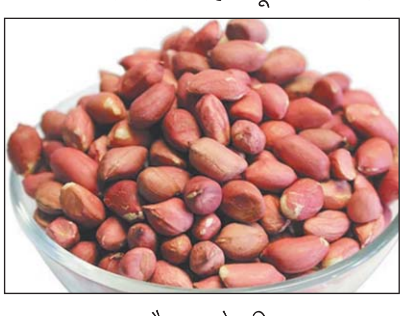

बनाना आसान है। इसके लिए 500 ग्राम मूँगफली लेकर इसे घी में तल लें। 1 किलोग्राम गुड़ लेकर इसे कड़ाही में गर्म करके पिघला लें। गुड़ में पिसी हुई 200 ग्राम सौंफ डाल दें तथा मूँगफली की गिरियों को इसमें मिला दें।

__तिल__ – तिल के तेल की मालिश त्वचा का रूखापन दूर करती है। 10-20 ग्राम काले तिल चबाकर ठंडा पानी पीने से दाँतों की नैसर्गिक चमक बरकरार रहती है। 10 ग्राम काले तिल को पानी के साथ पीसकर

इसमें एक चम्मच मक्खन मिलाकर चाटने से खूनी बवासीर (पाइल्स) से होने वाला रक्त-स्त्राव बंद हो जाता है। चाहें तो इसमें मिश्री भी मिला सकते हैं। सुबह-शाम यह प्रयोग करें। सर्दियों में छोटे बच्चों में बिस्तर गीला करने की समस्या बढ़ जाती है। इसके निदान के लिए 100 ग्राम काले तिल व 50 ग्राम अजवाइन को 200 ग्राम गुड़ में मिलाकर खिलाएँ।

__खजूर__ –आयुर्वेद का मानना है कि खजूर हृदय को असीम शक्ति प्रदान करता है। पूरे शरीर में होने वाली जलन को भी यह दूर करता है। यह चिकना और पचने में

भारी होता है। खजूर के सेवन से दमे के रोगियों के फेफड़ों से बलगम आसानी से निकल जाता है। यह लीवर को भी शक्ति प्रदान करता है। यह शरीर में रक्त-वृद्धि करता है। लकवा और सीने के दर्द की शिकायत को दूर करने में भी खजूर सहायक होता है।

__गुड़__ –आयुर्वेद के मतानुसार गुड़ क्षारीय, भारी व स्निग्ध होता है। ठंड में यह शक्तिवर्धक है और मूत्र की रुकावटों को दूर

करता है। गुड़ जितना पुराना हो उतना अधिक गुणों से युक्त होता है। गुड़ में पाया जाने वाला क्षारीय गुण रक्त की अम्लता को दूर करता है। मेहनतकश एवं खिलाड़ियों के लिए तो यह किसी वरदान से कम नहीं है। भोजन के बाद गुड़ खाना सेहत के लिए लाभकारी होता है। सोंठ या सूखी अदरक के साथ गुड़ का सेवन लाभकारी होता है। ठंड में काले तिल में पुराना गुड़ मिलाकर बनाए लड्डुओं का सेवन दमा, जुकाम जैसी श्वसन तंत्र की बीमारियों में राहत दिलाता है।

पाक्षिक पंचांग

27 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
कार्तिक शुक्ल 6 से आगहन कृष्ण 4 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार	
27	अक्टूबर	सोम	कार्तिक शुक्ल	6	डाला छठ
28	अक्टूबर	मंगल	----------	7	
29	अक्टूबर	बुध	----------	8	गोपाष्टमी
30	अक्टूबर	गुरु	----------	9	अक्षय (आंवला) नवमी पंचक 2.15 रात से
31	अक्टूबर	शुक्र	----------	10	पंचक
1	नवम्बर	शनि	----------	11	देवउठनी एकादशी, पंचक
2	नवम्बर	रवि	----------	12	चातुर्मास समाप्त, पंचक
3	नवम्बर	सोम	----------	13	प्रदोष व्रत, पंचक
4	नवम्बर	मंगल	----------	14	बैकुंठ चतुर्दशी पंचक 11.20 दिन तक
5	नवम्बर	बुध	----------	15	स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6	नवम्बर	गुरु	अगहन कृष्ण	1	
7	नवम्बर	शुक्र	----------	2	
8	नवम्बर	शनि	----------	3	गणेश चतुर्थी
9	नवम्बर	रवि	----------	4	

प्राकृतिक खेती महत्वपूर्ण : श्रीमती पारधी

बालाघाट (कृषक जगत)। परियोजना संचालक आत्मा कृषि विभाग द्वारा राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत कृषि सखियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सांसद श्रीमती भारती पारधी ने संबोधित कर आत्मनिर्भर भारत के लिए प्राकृतिक खेती को महत्वपूर्ण बताया उन्होंने कहा कि हम सभी का कर्तव्य खेती की आय में वृद्धि करना एवं प्राकृतिक खेती करके जहर मुक्त अनाज का उत्पादन करना है। उन्होंने अधिक से अधिक किसानों से प्राकृतिक खेती करने की अपील की।

कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव में आयोजित प्रशिक्षण में कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती के घटक जीवामृत, बीजामृत, अग्निअस्त्र, आच्छादन, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, घनजीवामृत आदि के निर्माण एवं उपयोग के तरीके बताए गए। जिले की प्रमुख फसल धान के अवशेष पराली को खेतों में जलन से होने बाले नुकसान साथ ही उचित प्रबंधन के विकल्प भी बताए गए। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सम्राट सिंह सरसवार, उप-संचालक कृषि श्री फूल सिंह मालवीय, कृषि वैज्ञानिक डॉ. एस. आर. धुवारे, डॉ. जगदीश कुटारिया, श्री धर्मेंद्र डोये, श्री जितेंद्र सिहोरे, श्री अजय बिजेवार उपस्थित थे। कृषि सखी श्रीमती मौसमी पांचे, श्रीमती रंजू मस्करे, श्री सुनीता सिहोरे ने प्रशिक्षण के दौरान प्राकृतिक खेती पर सकारात्मक फीडबैक दिया। प्रशिक्षण की सफलता में श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा,श्री दिलीप कुमार शिव का योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन मौसम वैज्ञानिक डॉ. धर्मेंद्र आगाशे ने किया।

पीएम मत्स्य संपदा से मरकाम को मिला सहारा

बालाघाट (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना चमरू सिंह मरकाम के लिए बड़ा सहारा बन गई है। इस योजना ने चमरू के जीवन की दशा एवं दिशा दोनो बदल दी है। चमरू अब मछली पालन कर सालाना 7 से 8 लाख रुपए की आय अर्जित कर रहे हैं। मछली पालन के पहले वह धान की खेती करते थे। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि मछली पालन से कम समय में ही वह लखपति बन जाएंगे और अन्य लोगों को रोजगार देने में सक्षम होंगे।

बालाघाट जिले के आदिवासी बाहुल्य विकासखंड बिरसा के ग्राम अजगरा के निवासी चमरू सिंह मरकाम अपने खेत में परंपरागत रूप से धान की खेती करते थे। लेकिन लागत अधिक होने के कारण मुनाफा बहुत कम होता था और किसी तरह जीवन की गाड़ी चल रही थी। 3 वर्ष पहले सहायक मत्स्य अधिकारी मीना कोकाटे ने मछली पालन की सलाह दी और उनका प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना में मछली पालन के लिए तालाब निर्माण का प्रकरण तैयार किया। इस योजना की राशि से चमरू के खेत में मछली पालन के लिए 4 छोटे-छोटे टैंक (तालाब) बनाए गए है। चमरू इन तालाबों में मछली पालन का कार्य कर रहे हैं।

चमरू केवल मत्स्य पालन तक ही सीमित नहीं है, उन्होंने इस वर्ष अपने तालाबों में झींगा भी पाला है। चमरू ने उद्यान विभाग की सलाह पर अपने खेत में आम का बगीचा भी लगाया है। आम के सीजन में वह 02 लाख रुपए तक के आम बेच देते हैं। चमरू ने अपने ढाई एकड़ खेत में इस बार चिन्नौर धान भी लगाया है।

उप मंडियों में व्यापारी सोयाबीन खरीदी केन्द्र बनाएं

इंदौर (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री शिवम वर्मा की अध्यक्षता में सोयाबीन खरीफ-2025 भावांतर भुगतान योजना को लेकर बैठक आयोजित की गई है। बैठक में अपर कलेक्टर श्री पंवार नवजीवन विजय, मण्डी बोर्ड की संयुक्त संचालक श्रीमती प्रवीणा चौधरी, मण्डी सचिव श्री रामवीर किरार, कृषि उप संचालक श्री सीएल केवड़ा सहित सोया प्लांट ऑपरेटर, व्यापारी एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर श्री वर्मा ने सोया प्लांट ऑपरेटर और व्यापारियों से कहा कि सभी उप मंडियों में व्यापारियों द्वारा सोयाबीन खरीदी केन्द्र लगाये जाये। व्यापारी वर्ग कृत्रिम रूप से सोयाबीन के भाव नहीं गिराये। सोयाबीन के राज्य के मॉडल रेट से जिले की मंडियों में सोयाबीन का रेट कम नहीं होना चाहिए, इसका विशेष ध्यान रखें। मंडी प्रांगण में प्रसंस्करणकर्ता (प्लांट संचालक) स्वयं कृषि उपज की खरीदी करें। कलेक्टर श्री वर्मा ने आगे कहा कि सोयाबीन एफएक्यू खरीदी पर ही भावांतर का लाभ मिलेगा। व्यापारी कृत्रिम रूप से भाव गिरायेगा तो उसे मण्डी अधिनियम विधि-1972 के तहत पहले उसे नोटिस देकर जवाब लिया जायेगा। कलेक्टर श्री वर्मा ने कहा कि सोयाबीन नीलामी में भाव तय होने एवं तौल उपरांत संबंधित क्रेता व्यापारी उसी दिन संबंधित कृषक को आरटीजीएस/एनईएफटी के माध्यम से भुगतान करेंगे।

ग्वालियर कृषि विश्वविद्यालय में प्रो. गुरुप्रसाद सिंह का दौरा

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) के डेयरी साइंस विभाग के प्रो. गुरुप्रसाद सिंह ने दौरा किया। कुलपति प्रो. अरविंद शुक्ला ने उन्हें विश्वविद्यालय की आधुनिक इकाइयों का अवलोकन कराया।

प्रो. शुक्ला ने प्रो. सिंह को बायोटेक्नोलॉजी लैब, जीन बैंक, एरोपोनिक यूनिट, हाइड्रोपोनिक यूनिट, नेट हाउस, हाईटेक नर्सरी, और जैविक तालाब दिखाया। इसके बाद, उन्होंने वैदिक गांव का भ्रमण कराया, जहां प्रो. सिंह ने ट्री हाउस से पूरे परिसर का अवलोकन किया और विश्वविद्यालय की नवाचार व्यवस्था की सराहना की।

प्रो. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं और नवाचार मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में दुर्लभ हैं। प्रो. शुक्ला और उनकी टीम के नवाचार कृषि शिक्षा और अनुसंधान के लिए प्रेरणादायक हैं। वैदिक गांव की अवधारणा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह ग्रामीण जीवन की समस्याओं से परिचय कराएगा और टूरिज्म को बढ़ावा देगा। प्रो. सिंह ने विश्वविद्यालय प्रबंधन को गौशाला के लिए बायोगैस यूनिट मॉडल तैयार करने का आश्वासन दिया, ताकि गौशाला में बायोगैस ऊर्जा से बिजली आपूर्ति हो सके।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-
⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम ....पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

जनेकृविवि के शोध छात्र की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में शानदार उपलब्धि

जबलपुर (कृषक जगत)। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के शोधकर्ताओं ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान एवं विस्तार के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। इसी कड़ी में कृषि महाविद्यालय, जबलपुर की डॉ. स्तुति शर्मा (प्रिंसपल इन्वेस्टिगेटर) और डॉ. आर. शिव रामकृष्णन (को-इन्वेस्टिगेटर) की परियोजनाओं के शोधकर्ताओं ने राजस्थान के उदयपुर में आयोजित 10वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'ग्लोबल रिसर्च इनिशिएटिव्स फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर एंड अलाइड साइंसेज' में भाग लिया। डॉ. शिखा उपाध्याय ने अपने शोध विषय 'कृषि-मॉर्फोलॉजिकल इवैल्यूएशनऑफ अलसी जर्मप्लाज्म फॉर डीयूएस टेस्टिंग एंड जेनेटिक वेरीएबिलिटी असेसमेंट' पर पोस्टर प्रस्तुत दी। जिसके लिए उन्हें 'बेस्ट पोस्टर प्रेजेंटेशन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वहीं, श्री प्रशांत नामदेव ने 'स्ट्रेंग्थेनिंग एग्रो-बायोडायवर्सिटी एंड फार्मर्स, राइट्स थ्रू कंजर्वेशन आफ इंडीजीनस वैराइटीज इन मध्य प्रदेश' विषय पर मौखिक प्रस्तुति दी और 'बेस्ट ओरल प्रेजेंटेशन' का खिताब जीता। मोनिका पटेल 'फेनोटाइपिक डिसेक्शन ऑफ साइसर एरीटिनम जर्मप्लाज्म फॉर डूयरेवल रजिस्टेंश टू फ्यूसेरियम ऑक्सीस्पोरम' पर पोस्टर प्रस्तुति दी, जिसके लिए उन्हें 'बेस्ट पोस्टर प्रेजेंटेशन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, अधिष्ठाता कृषि संकाय, डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी. के. कौतू, कुलसचिव डॉ. ए.के. जैन एवं अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ. अनिता बब्बर ने शोधकर्ताओं को बधाई और शुभकामनाएं दीं।

सुपर सीडर को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

खंडवा (कृषक जगत)। ग्राम अमलपुरा के किसान श्री पूनम शंकर पटेल और मनोहर पालीवाल ने अपने खेतों के लिए 'सुपर सीडर' मशीन खरीदी है, जिससे उन्हें अब पराली जलाने से मुक्ति मिलेगी और पर्यावरण को होने वाले नुकसान पर रोक लगेगी। खंडवा की विधायक श्रीमती कंचन मुकेश तन्वे ने शनिवार को कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट परिसर से दोनों सुपर सीडर मशीन वाले ट्रैक्टर्स को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान श्री धर्मेंद्र बजाज और श्री हरीश कोटवाले भी मौजूद थे ।

इस अवसर पर उप संचालक कृषि श्री नितेश यादव ने बताया कि सुपर सीडर मशीन एक ही बार में सब काम एक साथ कर देती है। यह खेत में फसल कटने के बाद बचे हुए हिस्से को एक साथ काटकर मिट्टी में मिला देती है, जिससे खेती के लिए जमीन भी तैयार हो जाती है, और सीधे बोनी भी हो जाती है। सुपर सीडर मशीन से रोटावेटर और सीडड्रिल के काम भी हो जाते हैं, जिससे किसानों का समय बचता है और खर्च भी कम होता है। उपसंचालक कृषि श्री यादव ने बताया कि दोनों किसान अपने खेतों में इन मशीनों का उपयोग करने के बाद अन्य किसानों को किराए पर देकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकेंगे, तथा आसपास के किसानों को भी पराली नहीं जलाना पड़ेगी और पर्यावरण को होने वाले नुकसान को भी रोका जा सकेगा।

हरदा में चना बीज पूसा पार्वती उपलब्ध

हरदा (कृषक जगत)। चना किस्म पूसा पार्वती (बीजी 3062) कृषि विज्ञान केंद्र हरदा में विक्रय हेतु उपलब्ध है।

कृषि विज्ञान केन्द्र प्रमुख डॉ. संध्या मूरे ने बताया कि यह किस्म 2020 में विकसित की गई, जो आई.सी.ए.आर.-आई.आई.पी.आर. कानपुर उत्तर प्रदेश से निकाली गई है। इसका उत्पादन 21 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म समय पर बुवाई एवं सिंचित क्षेत्र के लिए अनुकूल है तथा उकठा रोग और जड़ सड़न के प्रति प्रतिरोध क्षमता रखती है। डॉ. मूरे ने बताया कि फाउंडेशन एफ-1 बीज राशि 8720 प्रति क्विंटल की दर से कृषि विज्ञान केंद्र हरदा से खरीदी जा सकती है। इस बीज पर किसी तरह का अनुदान नहीं है। अधिक जानकारी एवं क्रय करने के लिये कृषि विज्ञान केंद्र हरदा ग्राम कोलीपुरा टप्पर में वैज्ञानिक डॉ. ओम प्रकाश भारती मोबाइल नंबर 9713579386 से संपर्क किया जा सकता है।

सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार के लिए आवेदन 15 नवम्बर तक

उमरिया (कृषक जगत)। परियोजना संचालक आत्मा ने बताया कि सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन आत्मा योजनांतर्गत जिले के सर्वोच्च उत्पादकता हासिल करने वाले कृषकों को जिला स्तर पर व कृषक ब्लाक स्तर पर सर्वोत्तम कृषकों को सम्मानित किया जाना प्रस्तावित है। सम्मान 26 जनवरी 2026 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर किसानों को दिया जाना है।

परियोजना संचालक आत्मा ने बताया कि जिले के तीनों विकासखंडों से एक-एक किसान को सर्वोच्च उत्पादकता पुरस्कार दिया जाएगा जिले के समस्त उत्साही व प्रगतिशील कृषकों (जिसमें कृषि, मत्स्य, उद्यानिकी, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी) से अपेक्षा है, कि वे अपने क्षेत्र अंतर्गत कार्यरत कृषि विस्तार अधिकारी या सीधे वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी कार्यालय से संपर्क कर आवेदन प्राप्त कर निर्धारित प्रपत्र में आवेदन कर सकते हैं।

किसान अपने आवेदन संबंधित विकासखंड कार्यालय वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखण्ड करकेली/ मानपुर/ पाली में 15 नवम्बर 2025 तक जमा कर सकते हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला उमरिया के कार्यालयीन समय में एवं दूरभाष क्रमांक 07653-222421 पर संपर्क किया जा सकता है।

कृषक जगत की सदस्यता हेतु संपर्क करें
शैलेन्द्र फरक्या, बलराम एंड ब्रदर्स, पिपलिया मंडी, जिला-मन्दसौर, मो. : 9893189345
सतीशचन्द्र शर्मा, मे. शर्मा एग्रो एजेन्सी, पनवाड़ी, जिला-शाजापुर, मो. : 9893296531

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
TerraGlebe NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो. :** 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

प्याज़ फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस से मिले पर्याप्त पोषण

प्याज़ फसल का मिले भरपूर उत्पादन

इंदौर (कृषक जगत)। भारतीय व्यंजनों के स्वाद में प्याज़ की अहम भूमिका रहती है। इसीलिए प्याज़ की वर्ष भर मांग को देखते हुए किसानों का प्याज़ की खेती की ओर रुझान बढ़ा है। इस वर्ष रबी सीजन में भी बड़े पैमाने पर प्याज़ की फसल ली जाएगी। प्याज़ की फसल में संतुलित पोषक तत्वों की पूर्ति होना आवश्यक है। प्याज़ फसल के बेहतरीन उत्पादन के लिए देश की प्रतिष्ठित उर्वरक कम्पनी आर.एम. फास्फेट्स एंड केमिकल्स लि. का उत्पाद महावीरा जिरोन पावर प्लस एक सही समाधान है, जिससे न केवल प्याज़ का आकार बड़ा होता है, बल्कि गुणवत्ता भी अच्छी होने से चमकदार प्याज़ का किसानों का बढ़िया दाम भी मिलता है।

आर. एम. फास्फेट्स एंड केमिकल्स लि. के सीनियर जीएम एवं हेड एग्रोनॉमिस्ट श्री प्रमोद कुमार पांडेय ने बताया कि महावीरा जिरोन पावर प्लस में 6 पोषक तत्व कैल्शियम, फास्फोरस, सल्फर, ज़िंक, बोरोन और मैग्नीशियम समाहित रहते हैं, जो फसल को संतुलित पोषण प्रदान करते हैं। प्याज़ की रोपाई के समय डीएपी की जगह महावीरा जिरोन पावर प्लस का इस्तेमाल करने से अच्छे नतीजे मिलते हैं। यह उत्पाद डीएपी का बेहतर विकल्प है। श्री पांडेय ने कहा कि महावीरा जिरोन पावर प्लस की 3 बोरी/एकड़ की मात्रा अनुशंसित है। इस अनुशंसित मात्रा के प्रयोग से प्याज़ का 135 से 165 क्विंटल/एकड़ तक का उत्पादन लिया जा सकता है और 25 से 35 हज़ार रु/एकड़ का अतिरिक्त मुनाफा कमाया जा सकता है।

प्याज़ की फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस का महत्व – 6 पोषक तत्वों के मिश्रण वाला महावीरा जिरोन पावर प्लस प्याज़ फसल के लिए बहुत लाभदायक होता है। इसमें मौजूद फॉस्फोरस जड़ों की वृद्धि में सहायक होता है, वहीं कैल्शियम पौधों को मज़बूती प्रदान कर प्याज़ के कंद को दीर्घ अवधि तक सड़ने से बचाता है। जबकि सल्फर प्याज़ कंद में तीखापन और गंध बढ़ाकर एंजाइम और विटामिन बनाने में मदद करता है। ज़िंक, क्लोरोफिल बनाने में सहायक होने के साथ ही प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाने में सहयोग करता है। जहां बोरोन प्याज कंद के समान आकार और उसकी चमक बढ़ाने में सहायक होता है, वहीं मैग्नीशियम प्याज़ की फसल को स्वस्थ रखने के साथ ही उसे हरा बनाए रखता है।

प्याज़ फसल में पोषक तत्वों की अनुशंसित मात्रा

प्याज़ रोपाई के समय – महावीरा जिरोन पावर प्लस की तीन बोरी अर्थात् 150 किलोग्राम/ एकड़ प्रयोग करें। इसके साथ ही प्रति एकड़ 4 किलोग्राम सिमट्रॉन, 20 किलोग्राम यूरिया और 53 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश (एमओपी) एवं 750 ग्राम फेरोची अवश्य डालना चाहिए।

प्याज़ रोपाई के 25 से 30 दिन बाद – 250 मिलीमीटर बलेको, 45 किलोग्राम यूरिया एवं 250 मिलीलीटर एमिट्रॉन-ज़ेड प्रति एकड़ इस्तेमाल करें।

प्याज़ रोपाई के 45 से 50 दिन बाद – महावीरा मोनो अमोनियम फास्फेट (एमएपी) 12:61:100, 4 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज़ रोपाई के 50 से 55 दिन बाद – ज़िंटाविक 250 मिलीलीटर, बोरट्री 200 मिलीलीटर एवं 22 किलोग्राम यूरिया/ एकड़ दें।

प्याज़ रोपाई के 60 से 65 दिन बाद – महावीरा कैल्शियम नाइट्रेट विथ बोरोन (सीएन + बी) 4 से 5 ग्राम/ लीटर पानी में एवं महावीरा पोटेशियम फॉस्फेट (एमकेपी) 00:52:34, 4 से 5 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

प्याज़ रोपाई के 80 से 85 दिन बाद – महावीरा पोटेशियम नाइट्रेट (एनओपी) 13:00:45 एवं महावीरा पोटेशियम सल्फेट (एसओपी) 00:00:50 को 4 से 5 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

महावीरा जिरोन पॉवर प्लस में उपलब्ध पोषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यून. प्रति.)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत

प्याज की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा – KG 40:24-32:20)

अवधि	ZIRON Power+ KG	MOP KG	UREA KG	SYMTRON KG	AMITRON-Z ML	BALECO ML	FEROCHI KG	MgSO4 KG
बुवाई के समय	150	30	45	4	0	0	1	0
25-30 दिन बाद में	0	0	20	0	–	200	0	25
50-55 दिन बाद में	0	0	22	0	250	0	0	0
कुल मात्रा KG/GM/ML	**150**	**30**	**87**	**4**	**250**	**200**	**1**	**25**
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी में	45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B+ 00:52:34 का तथा 80-85 दिन की अवधि में 13.00.45/00.00.50 का एक छिड़काव अवश्य करें।							

कोरोमंडल ने 12 गांवों को ग्रोमोर ग्राम बनाया

किसानों की फसल उत्पादकता बढ़ाने की अनूठी पहल

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कम्पनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लि. ने किसानों की फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से 12 गांवों का चयन कर उन्हें ग्रोमोर ग्राम बनाया है। इन्हें मॉडल गांव कार्यक्रम के माध्यम से ग्रोमोर गांव के रूप में विकसित और कार्यान्वित किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि ग्रोमोर ग्रामों के लिए मध्य प्रदेश में 9, छत्तीसगढ़ में 1 और गुजरात में 2 गांवों का चयन किया गया है। ग्रोमोर ग्राम बनाने का उद्देश्य उच्च तकनीकी सेवाओं, आधुनिक प्रौद्योगिकियों, नवीन समाधानों और सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से किसानों की फसलों की उत्पादकता में सुधार के साथ एकीकृत और मापनीय तरीके से सुविधाएं प्रदान करना है। चयनित पायलट गांवों को एकीकृत कृषि पद्धतियों, बेहतर आजीविका और टिकाऊ व्यावसायिक परिणामों का प्रदर्शन करके मॉडल गांव कार्यक्रम के माध्यम से ग्रोमोर गांव के रूप में विकसित और कार्यान्वित किया जाएगा। ग्रोमोर सेवाओं के तहत ग्रोमोर ड्रोन ड्राइव, मृदा परीक्षण, पत्ती परीक्षण, परामर्श एवं सीएसआर गतिविधियां संचालित की जाएंगी। इस अनूठी पहल से किसानों के सम्मान के साथ ही संवाद से आपसी विश्वास पैदा होगा, जो दोनों पक्षों के लिए लाभदायक होगा।

गत अगस्त माह में मप्र में पोनिया (छिंदवाड़ा),कर्नावट (देवास), टेमागांव (हरदा), जोध (राजगढ़), मऊ (राजगढ़), कापसी (धार) और हथनारा (रतलाम) में ग्रोमोर ग्राम स्थापना के कार्यक्रम आयोजित किए गए। टेमागांव (हरदा) में आयोजित ग्रोमोर ग्राम कार्यक्रम में श्री अमित मिश्रा, डिवीजनल एग्रोनॉमिस्ट,श्री हिमांशु सिंह, मार्केटिंग ऑफिसर एवं अंकिता बेलवाल, एग्रोनॉमिस्ट, हरदा शामिल हुए। इन्होंने किसानों के साथ परिचयात्मक बैठक कर किसानों को ग्रोमोर ग्राम की इस नई पहल के बारे में विस्तार से जानकारी दी और वृक्षारोपण अभियान के साथ ग्रोमोर ग्राम कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। किसानों को टेमागांव को मॉडल गांव के रूप में विकसित करने के प्रति आश्वस्त किया गया।

ICL

#सिर्फ_ICL!

हर दाने में पोषण
हर खेत में समृद्धि

ICL फर्टिलाइज़र्स से आपकी फसल को मिले ज़रूरी पोषक तत्व, जो दें फसल को मज़बूती और चमक।
गेहूं और चने की फसलों में बेहतर उत्पादन।

BIOZ ICL | Select™ | PeaK | Polysulphate | FertiFlow™ | NutriVant™ Foliar Nutrition Line

1800 210 3031 880 618 51 95
www.icl-growingsolutions.com